अध्याय : २

'झरोखे' और 'तमस' का कथ्य

==========

अध्याय : 2

'झरोखे' और 'तमस' का कथ्य

==========

'झरोखे' उपन्यास के लेखन के साथ ही भीष्म साहनी जी ने उपन्यास साहित्य में प्रवेश किया। झरोखे आपका पहला उपन्यास है। झरोखे उपन्यास के माध्यम से भीष्मजी ने छोटे बालक की आँखों के माध्यम से परिवार की छोटी छोटी घटनाओं को देखने का प्रयास किया है। परिवार में घटनेवाली प्रत्येक छोटी मोटी घटना बालक के मन में एक संस्कार बनकर सामने आती है और परिवार में बच्चों के भावी आयुष्य की रूपरेखा बढती चली जाती है।

'झरोखे' उपन्यास का कथ्य :-

उपन्यास के आरम्भ में ही भीष्मजी लिखते हैं कि "जिन्दगी पर के कुछेक झरोखे, लगता है, अपने हाथों से खोल रहा हूँ।"[1]

एक छोटा बालक जिंदगी के कुछ झरोखे अपने हाथों से खोलता है। अनेक नयी पूरानी यादें बालक के मन में ताजा होकर आँखों के सामने उतरती है। बालक को लगता है जैसे उसका अतीत अपने समूचे स्वरुप के साथ उसके सामने स्पष्ट होता है।

अनेक सायें और आवाजें, काला, सफेद, लाल आदि भटकते रंगों का झुरमूट आँखों के सामने उभरने लगता है। दिन में उठनेवाली आवाजे दिन के अंत में ही अपना अस्तित्व खो देती है, परंतु सायंकाल और रात के समय में उठनेवाली आवाजें हवा के साथ, दीवारों को पार करके चली आती हैं और मेरी ओर ही आ जाती है।

"शाम के झुटपुटे में, आँगन के एक ओर 'तन्दूर' भभक रहा है, रसोईघर के बाहर आले में लैम्प जल रहा है। रसोईघर के अंदर लाल लौ देता हुआ चूल्हा जल रहा है। घर का

कोई व्यक्ति आले में रखे लैम्प को उठाकर रसोईघर में से बाहर निकला है और घर का आँगन लाँघने लगा है। प्रकाश और अन्धकार सहसा आपस में उलझ गये है, उनमें हरकत आ गयी है, और दीवारों पर भयावह लम्बे-लम्बे साये पड़ने लगे है। उस व्यक्ति की टाँगों से लिपटी रोशनी की लौ दूर होती जा रही है।"[2]

बालक को लगता है जैसे शाम होनेपर अनेक भूत-पिशाच छत पर आते हैं और मेरी ओर देखते हैं। अटपटी काली रेखाओं से बना जाल एक बडे काले धब्बे में सिमटता है। बालक के मुँह से 'ऊँह' शब्द निकलता है। बालक का माथा तप रहा है। इसकारण माँ उसके माथे पर हाथ फेरते हुए मोतीराम का बारहमास गा रही है –

"चेतर चित्त विच समझ पियारे
दुनिया झूठा भाणा ई
जिन्हां नाल तुघ लायी दोस्ती
उन्हांवी चला जाण ई।"[3]

माँ बारहमासा सुना रही है उसी वक्त पिताजी के आने की आहट सुनाई देती है। बालक को मालूम है कि पिताजी माँ पर गुस्सा हो जायेंगे इसलिए वह अपने मुँह से फिर 'ऊँह' करके करवट बदलता है ताकि माँ समझ जाए। परंतु माँ को कुछ समझने से पहले ही पिताजी गुस्से में कहते हैं कि, "हजार बार मना किया है बच्चों के सामने 'विराग' के गीत नहीं गाया कर। पर तू ऐसी 'हूड़मत' है, मानती ही नहीं।"[4] उसपर माँ धीरे से कहती है, "मुझे यही अच्छे लगते हैं, मैं क्या करूँ? मैं यही गाऊँगी।"[5] पिताजी माँ को समझाते हैं, "ये निराशा के गीत है, बच्चों को अच्छे-अच्छे आशा के गीत सुनाने चाहिए। इनके कानों में वेद-मन्त्र पढने चाहिए। तू विराग के गीत ले बैठती है। शाम के वक्त ये गीत गाओं तो बच्चों के दिल पर बुरा असर पडता है।"[6]

बालक के पिताजी आर्यसमाजी हैं और अपने नियमों एवं सिध्दांतो के पक्के हैं। बालक के अलावा घर में और भी सदस्य है। बालक से बड़ा भाई बलदेव है, एक दूसरे के साये की तरह रहनेवाली दो बहनें है, नौकर तुलसी है।

घर से थोडे ही दूर होनेवाले गुरुकुल में तीर कमान के खेल होने जा रहे थे। बलदेव और तुलसी दोनों गुरुकुल खेल देखने के लिए जाना चाहते है। उन दोनों को पिताजी इजाजत देते हैं परंतु माँ चाहती है कि वे दोनों खेल देखने न जाए। बालक भी चाहता है कि उन दोनों को जाने की इजाजत न मिले। परंतु जब तुलसी और बलदेव का गुरूकुल जाना पक्का होता है तो बालक भी गुरूकुल जाने की रट लगाता हे। पिताजी चाहते थे कि बालक तुलसी के साथ कंधेपर बैठकर चला जाए। लेकिन माँ इजाजत नहीं देती और बलदेव ओर तुलसी गुरूकुल चले जाते हैं। पिताजी बालक को समझाते हैं कि वह अच्छा हो जाने पर उसे गुरूकुल ले चलेंगे। सहसा बालक अपने आप में खो जाता है और छत की ओर ताकता रहता है।

अगले दिन सब कुछ स्वाभाविक हो जाता है। दूर से आवाज आती है 'पहाड डंडे'। एक फकीर चिल्लाता हुआ आया है और माँ बालक को साथ लेकर उसे आटा देने के लिए जा रही है। बालक फकीर से डरता है परंतु माँ के ढाढस बँधाने के कारण वह फकीर को आटा देता है। माँ फकीर से कहती है कि कुछ सुनाए। फकीर इकतारा बजाते गाना गाने लगता है –

"कोई दम दा मेला, नगरी में बोलो
अल्लाह दे प्यारे, नगरी में बोलो ।
बेपरवाहियाँ तेरियाँ ते तूँ डाढा बेपरवाह
वगदियाँ नदियाँ थल करें, तू थलों करें दरिया।
कोई दम दा मेला।
नगरी में बोलो
मौला दे प्यारे
नगरी में बोलो।"[7]

पूरे दिनभर बालक घर में इधर उधर घूमता रहता है। शाम को बालक और उसका बडा भाई एक ही खाट पर सोते हैं। बालक सोते समय भाई के साथ लडता है। घर में होनेवाली प्रत्येक चीजपर उसकी नजर जाती है। घर में होनेवाली प्रत्येक घटनापर उसकी नजर बनी रहती है। उसकी दोनों बहने आपस में वेद और वेदांग के बारे में चर्चा करती है, पिताजी आँगन से माँ को दही भेजने कहते है ताकि पिताजी नहा ले। इसप्रकार घर में होनेवाली प्रत्येक घटनापर बालक अपनी नजर रखता है।

घर में एक ओर पिताजी का दफ्तर है। दफ्तर में होनेवाली प्रत्येक चीज की जानकारी बालक को है। जब कभी तुलसी पिताजी के दफ्तर में जाता है तो पिताजी उसे बहुत डाँटते हैं। पिताजी के दफ्तर में एक घडी है, टाइपरायटर है, स्वामीजी की एक तस्वीर है। घर में होनेवाली स्वामीजी की तस्वीर नंगी है और दफ्तर में होनेवाली तस्वीर कपडे में है। तस्वीर में स्वामीजी के पीछे एक शेर है और साँप भी। तस्वीर को देखकर बहन कहती है, "देखो? स्वामीजी किसी से भी नहीं डरते थे, शेर से भी नहीं, चीते से भी नहीं।"[8]

बालक गलियों में जाकर अनेक गंदी गालियाँ सीखता है। वह जब "भैन चोद" गाली देता है तो तुलसी माँ के पास शिकायत करता है। माँ बालक की बहुत पिटाई करती है। तुलसी जब गाय का साना पानी करते गाना गाता है तो बालक एक डिब्बा बजाबजाकर चिल्लाता रहता है, "उठो मुसलमानों रोजे रखो ए।" इस बातपर आसपास के पडोसी तथा माँ भी हँसती रहती है। बालक बीमार होने के कारण दिनभर घर में ही रहता है। अपनी अस्वस्थता दूर करने के लिए बालक घर के छज्जे पर खडा होकर बाहर के दृश्य देखता रहता है। बालक देखता है कि गिरधारी, मनोहर, इंदर बर्रे पकडते। भिश्ती मशक में पानी भर रहा है, फैजअली घोडे को ताँगे से अलग कर रहा है, उसका बेटा घोडे को लगाम से पकडकर सडक के बीच में लाया है। गिरधारी "आ गुल्ली डंडे" पुकारकर गली के लडकों को गुल्ली डंडा खेलने के लिए बुला रहा है। सुबेदार जलालखान का बेटा चरनी से अतरसिंह की दूकान तक और फिर दूकान से चरनी तक घूमता रहता है। घर के छज्जे पर आने के लिए दोनों बहनों को मना किया

गया है। वह छज्जेपर आती हैं तो पिताजी डाँटते हैं। दोनों बहनें खिडकियों से बाहर भी नहीं देख सकती। बडी बहन विद्या बहुत हँसती है, छोटी विमला थोडा कम हँसती है। परंतु दोनों मिलकर सारा वक्त हँसती रहती है।

तुलसी और बालक चौबीस घंटों एक दूसरे के साथ रहते हैं। दोपहर के समय पण्डितजी जब पढाने आते हैं तो तुलसी सारा वक्त दहलीज पर बैठा रहता है। गोंद में बुरादा मिलाकर बलदेव छापखाना बनाता है और तुलसी बालक के साथ कोयला पीसकर छापखाने के लिए रोशनाई तैयार करता है। तुलसी शरीर से हट्टा कट्टा है इसलिए बालक के साथ झगडा करने की किसी की हिम्मत नहीं होती। "यह तो बहशी है", माँ हमेशा कहा करती है, ---------"यह कोई आदमी है, यह तो डंगर है।"[9] माँ की इस बात पर दोनों बहने हँसती रहती है। तुलसी शौच के लिए बाहर ही जाता है। शौच के लिए वह जब जाता है तो मुहल्लेवाले उसे पत्थर मार मार कर उठाते हैं और वह लहू-लुहान होकर घर लौटता है। पिताजी नहीं चाहते कि तुलसी वही शौच के लिए जाए जहाँ घर के और सदस्य जाते हैं। माँ कहती है, "देखो जी, तुलसी रफा-हाजत के लिए पीछे कब्रिस्तान में जाता है, अँधेरे में चला जाये तो कोई नहीं देखता, पर देर-सबेर हो जाये तो उसे पत्थर मार-मारकर उठा देते हैं। जहाँ घर के सब लोग जाते हैं, वहाँ यह भी चला जाया करे, रोज का झगडा तो खत्म हो।"[10] "यह जल्दी क्यों नहीं जा सकता?" पिताजी बडबडाकर कहते हैं, "यह खाता बहुत है, आठ-आठ रोटियाँ खा जाता है। ये लोग गन्दे होते हैं।"[11] अन्त तक पिताजी इस बात को नहीं स्वीकार करते कि तुलसी उसी शौचालय का इस्तेमाल करे जहाँ घर के सभी लोग शौच के लिए जाते हैं।

घर के बायी ओर, कुछ दूरी पर एक पहाड है। बलदेव और बालक चर्चा कर रहे हैं कि पहाड के पीछे क्या है। बलदेव कहता है कि पहाड के पीछे विलायत हैं। परंतु तुलसी बता देता है कि उस पहाड के पीछे उसका गाँव है 'रुमली'। जब कभी रुमली से तुलसी के चाचा और भाई मिलने आते हैं तो दोनों बहने उनको देखकर हँसती रहती है। गाँव में थोडा

झगडा होने के कारण कोई पिताजी को पीटता है और उनकी उँगली तोड देता है। यह बात घर में मालूम होनेपर माँ चाहती है कि यह बात तुलसी को न मालूम हो। इसलिए सभी तुलसी को ढूँढने लगते हैं। तुलसी घर में कही नहीं मिलता। थोडी देर बाद वह लौटकर आता है तो उसकी आँखें सूजी थी और माथे पर गूमड उभर आया था। माँ उसे थोडा डाँटती है तो वह झट से बोलता है, "उसके दाँत से भी खून बह रहा है। वह तीन थे मैं अकेला था। मैंने उसकी उँगली भी मरोडी है।"[12] तुलसी उस आदमी के दो खीरे भी उठाकर ले आया है। पिताजी का बदला लेने के कारण माँ तुलसी से नाराज है परंतु मैं खुश हूँ। तुलसी, पिताजी के प्रति समर्पित है। इस घटना के बाद तुलसी मुझे और बलदेव को लडाई के दाँवपेंच समझाता है। बलदेव उसे अनेक प्रश्न पूछता है।

बालक और उसका भाई बलदेव को पढाने पंडितजी रोज घर आते है। पंडितजी पढाने से पहले अपनी तनख्वाह के बारे में बात करते हैं और बाद में श्लोक याद कराते है। हम दोनों को अच्छी अच्छी बाते सिखाते है। सदाचार, दुराचार के बारे में बताते हैं। पंडितजी बताते हैं कि गाली देना, पेशाबवाली जगह को हाथ लगाना आदि दुराचार है। भाई जब पंडितजी को बताता है कि बालक पेशाबवाली जगह को हाथ लगाता है। पंडितजी धीमी आवाज में पुछते है, "क्या, तुम सचमुच पेशाबवाली जगह को हाथ लगाते हो?" "जी", मैं सिर हिलाकर कहता हूँ, "मैं उसे लम्बा भी कर सकता हूँ।"[13] बालक के इतना बताने पर पंडितजी बालक को बहुत पीटते है, उसे भला-बूरा कहते हैं। पढाते पढाते पंडितजी बीच में ही तुलसी से कहते है, "अभी तक लस्सी नहीं लाये, तुलसी?" पंडितजी जब घूँट-घूँट करके लस्सी पीते हैं तो बालक को आनंद होता है क्योंकि पढाई थोडी देर के लिए रुक जाती थी। पंडितजी तुलसी को मक्खन लाने को कहते हैं तो माताजी उपर बडबडाने लगती है, "खाली लस्सी पिये तो मुढ के पेट में शूल उठता है। इसे रोज मक्खन भी चाहिए। उँ ... जा, ले जा 'सरपोस' में से।"[14] बालक पंडितजी को चिखने के लिए कहता है कि "आपके नाक पर से रेलगाडी गुजरी थी।" इस बातपर पंडितजी बालक को बहुत डाँटते हैं और फिर समझाते हैं। पंडितजी से सदैव मार खाने तथा

डाँटने के कारण बालक उनसे न पढने की घोषण करता है। माँ को जब मालूम होता है कि पंडितजी बालक को मारते हैं तो वह उनपर बहुत गुस्सा होती है। परंतु भाईद्वारा माँ को पता चलता है कि बालक पेशाबवाली जगह को हाथ लगाता है तो माँ भी बालक की पिटाई करती हैं।

घर में हररोज शाम के समय संध्या होती है। घर में सभी को संध्या मन्त्र याद है। दोनों बहनों में शर्त लगती है कि कौन पहले सारे मन्त्र बोले। घर में कभी कभी अनेक साधू–महात्माओं की भीड होती हैं। विशेषकर आर्य समाज का वार्षिकोत्सव जब होता है उस समय अनेक साधू–महात्मा घर आते हैं। माँ उनसे पूछती है, "महाराज, मेरा संध्या में मन नहीं लगता। कोई उपाय बताइए। मैं आँखें बन्द करती हूँ तो मन कभी कहीं तो कभी कहीं उडारियाँ मारने लगता है। इसका क्या इलाज करूँ?"[15] महात्मा उसे गायत्री उपासना तथा प्राणायाम करने के लिए कहते हैं। परिवार आर्यसमाजी है लेकिन माँ कभी कभी गुरुद्वारे भी जाती है और शिवाले वाले मन्दिर भी जाती है। मगर पिताजी के पीठ पीछे। वह नहीं चाहती कि पिताजी को इस बात का पता चले।

पडोस में रहनेवाले म्लेच्छों के घर जब बकरे की सिरी भूनती है, उस दिन घर में हवन होता है। घर के सारे सदस्य म्लेच्छों पर गुस्सा होते हैं। हवन शुरु होता है तो तुलसी अपनी खरज आवाज में कहता है, "हवन की पवित्र आहुतियों से जो धुआँ उठेगा वह पापी म्लेच्छों के गन्दे धूएँ को खत्म कर देगा।"[16] हवन के समय घी की आहुतियाँ केवल पिताजी डालते हैं, बाकी सब लोग सामुग्री की आहुतियाँ डालते हैं। बालक को यह बहुत बडा पक्षपात लगता है। तुलसी को हवन के सारे मन्त्र याद हैं। परंतु तुलसी की खरज आवाज के कारण बहनें उसपर हँसती हैं। घर की भलाई के लिए तथा शुध्दी के लिए प्रार्थना होती हैं। तुलसी की आवाजपर माँ गुस्सा हैं। बालक भी परेशान है, सोचता है पिताजी तुलसीपर नाराज होंगे क्योंकि तुलसी मन्त्रोच्चारण में पिताजी से भी आगे है। उस दिन संध्या आरम्भ हो जाती है।

तुलसी को संध्या मंत्र भी याद है वह अपनी खरज आवाज में मंत्र गा रहा है। तुलसी का प्रार्थना में भाग लेना माँ को अच्छा नहीं लगता। संध्या समाप्त होने पर पिताजी ताली बजाकर ईश्वर स्तुति का गीत गाने लगे हैं और तुलसी भी उनके साथ गा रहा है,

"जीव जब संसार दे, गिनती न आखी जांवदी
अन्न पाणी दान करदा, जो जिसे मत भांवदी..."[17]

पिताजी तुलसी को पढाना चाहते हैं इसीकारण बलदेव से कहते हैं कि तुलसी के लिए कलम और कापी लाये। परंतु माँ इस बात के विराध में हैं। उसे डर लगता है कि अगर तुलसी पढ लिख जाये तो वह काम के लिए अकेली रह जाएगी। तुलसी की पढाई को लेकर माँ और पिताजी में झगडा भी होता है। पिताजी उसे कहते हैं, "बोलती जा, बोलती जा, जो मन में आए कहती जा। बसी नहीं करना। तुलसी को दो अक्षर पढ लेगा तो इसमें तेरा क्या नुकसान हैं?"[18]

घर में माँ की चाभी अक्सर गुम जाती है। इस बात को लेकर पिताजी बार बार सबको कोसते रहते हैं कि कोई भी चीज एक जगह नहीं रहती। माँ चाभी को लेकर परेशान होती है। घर में सभी सदस्य चाभी ढूँढने लगते है। घर में मौसी आयी है जो चाभी के लिए नजूमी (ज्योतिषी) के यहाँ जाना चाहती है, परंतु पिताजी उसे वहाँ जाने के लिए मना करते हैं। हर चीज समय पर न मिलने के कारण पिताजी छोटी छोटी चीजों के लिए जगह बनाते है। अनली बार कभी चाभी गुम न जाए इसलिए पिताजी एक निश्चित जगह पर कीला ठोंक देते है। सभी जगहोंपर ढूँढने के बाद अंत में विद्या को चटूरी के नीचे चाभी मिलती हैं।

दोपहर के समय घर के सामने खंभे के साथ एक आदमी को बाँधकर रखा है। फैजअली अपनी पगडी उतारकर पगडी से ही आदमी को खंभे के साथ जोर जोर से बाँध रहा है। आदमी अपने आप को छुडाने के लिए कुछ भी नहीं कर सकता क्योंकि पीठ–पीछे उसके दोनों हाथ बँधे हुए है। फैजअली उसे बहुत मार दे रहा है। लँगडा बाबा नुरु अपनी कोठरी से बाहर आकर खंभे के साथ बँधे आदमी को पीटने लगा है। माँ के विरोध के बावजूद भी पिताजी भी उस आदमी के पास जाते है। फैजअली और नुरु उस आदमी को पीटने का कारण

बताते है तो पिताजी वापस घर में आते है। इसी समय और भी कुछ लोग चरनी की ओर से आते है और फैजअली तथा बाबा नुरु को मारना शुरु करते हैं। रास्तेपर बहुत भीड जमा होती है। माताजी हम दोनों को छज्जे से हटा देती है। पिताजी भी अपने दफ्तर में बैठकर काम करना शुरु करते है।

पिताजी से मिलने दो मुसलमान व्यापारी आये है। व्यापारी मुसलमानों के साथ पिताजी हँस-हँसकर बातें करते है, उनकी ठुड्डी को हाथ लगाते हैं। परंतु गली में रहनेवाले मुसलमान गंदे है, बकरे कि सिरी भूनते हैं, हिन्दुओं के खोमचे लूटते हैं, उनके बच्चे गालियाँ देते है इसीलिए पिताजी हमें उनके साथ खेलने नहीं देते। रसोईघर के बाहर आले में कुछ बर्तन रखे है। ये मुसलमानों के बर्तन है। उनमें दो चीनी की प्लेटें, दो फूलदार प्याले, और नमूने की चायदानी है। घर में आनेवाले मुसलमानों को इन्हीं में खाना और चाय दिया जाता है।

चिट्ठियाँ डालने के कारण से पिताजी रोज ही तुलसी को डाँटते हैं। एक दिन देर होने के कारण तुलसी चिट्ठियाँ वापस लेकर आया है। इस बातपर पिताजी उसे डाँटते हैं। कहते हैं, "तुझसे कोई काम हो ही नहीं सकता। तू सिर्फ रोटियाँ फाडना जानता है। अब मेरा मुँह क्या देख रहा हैं, भागकर स्टेशन पर जा। सीधा, नाला पार करके जा ओर चिट्ठियाँ डालकर आ।"[19] रात का समय होने के कारण माँ मना कर देती है। इस बात को लेकर माँ और पिताजी में झगडा होता है और पिताजी गुस्से से घर छोडकर चले जाते हैं। अपने किये पर माँ बहुत पछताती है। बलदेव तथा दोनों बहनें अत्यंत दुखी हो जाते हैं। माँ हाथ-पर-हाथ मारकर कहती है, "मैं पापिन, मेरी जबान मेरे वश में नहीं है, मैं सारा वक्त बकती रहती हूँ...." फिर दोनों हाथ जोड देती है, "हे भगवान, मुझे 'सुमत लाओ' (सुमति दो), मैं बोलती बहुत हूँ। "और सहसा अपने बैठने की चटाई पीछे खिसकाकर दीवार के साथ पीछ लगाकर कहती है, "आज से मैं मौन रखूँगी। बस, अब मैं नही बोलूँगी।"[20] कुछ समय बाद पिताजी लौट आते हैं। घर के सदस्य खुश होकर उनसे आग्रह करते हैं कि वे फिर कहीं न जाए। घर का वातावरण फिर पहले जैसा हो जाता है।

घर में कश्मीर से कुछ मेहमान आये हैं। पिताजी तुलसी को उनका सामान उतारने के लिए बुलाते हैं। दोनों बहने भागकर छज्जेपर जाती है और देखती है कि कौन आया है। घर में चली गडबड को देखकर भाई और बालक समझ जाते है कि घर में कोई आया है। विद्या बहन कहती है कि कश्मीर से हमारी बहने आयी हैं। तीन बहनों के साथ उनका भाई और माता–पिता भी आये हुए हैं। फिर सब भाई बहन मिलकर एक खाट पर बैठते हैं। कश्मीर की नमकवाली चाय, बाकरखानी आदि के बारे में चर्चा हो रही है। तीनों बहने मिलकर बालक का बात–बात में मजाक उडाती है। तीनों बहनों को सारी सन्ध्या याद है। वह जब श्लोक के बारे में पूछती है तो बालक नहीं जानता की श्लोक क्या है। बालक को यह भी मालूम नहीं कि मंतू क्या है? बुखारी क्या है? तीनों बहनें पालथी मारकर श्लोक बोलने लगी है –

"त्वमेव माता च पिता त्वमेव,
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।"[21]

हमारी बडी बहन तुलसी की ओर इशारा करके कहती है "इसे भी मन्त्र आते हैं।" वह फिर कहती हैं "यह पढता भी है, सारी प्रवेशिका पढ लेता है।" छोटी बहन बडे गर्व से कहती है, मानो जतलाना चाहती हो कि अगर आपके पास बाकरखानियाँ है और श्लोक है तो हमारे पास दिखाने को तुलसी है।"[22] फिर बालक से और भाई से नाटक की बातें होती है। बडा भाई उनको पृथ्वीराज चौहान, श्रवणकुमार और महाराणा प्रताप के नाटक के बारे में बताता है। तुलसी भी हमारे साथ ही बैठा रहा है इसीकारण माँ उसपर नाराज होती है। ऐनकवाली लडकी ने तुलसी को एक किताब दे दी है। उस किताब को देखकर माँ कहती है कि, "घण्टा भर से बैठा यहाँ किताब पढ–मर रहा है, और इसे ढूँढढूँढकर मेरी टाँगे टूट गयी है। नौकरों को पढाई से मतलब ? जो पढ़ना–मरना था तो यहाँ क्यों आया?"[23] माँ ने आजतक तुलसी को मेहमानों के सामने इतना कभी नहीं डाँटा था। माँ के डाँटनेपर तुलसी गुस्से में अपना बाजू काट खाता है और फूट–फूटकर रोता हैं।

बालक शहर के किसी ताँगे में चुपके से चढता है और शहर की सैर करता है। पायदान पर बोझ पडा जानकर ताँगेवाला चाबुक पीछे की ओर घुमाता है तो चाबुक बालक की पीठ पर लगता है ओर दायें कान को छू जाता है। इस स्थिति में भी बालक पायदान से नहीं उतरता। ताँगेवाला जब पीछे देखता है – "अरे, यह तो बाबू का बेटा है!" कहकर सामने देखकर ताँगा चलाने लगता हैं। रास्ते के दोनों ओर होनेवाले घर, घरों की छतें, टंगे हुए कपडे, सडकों पर दिखनेवाले अनगिनत लोग, हर मोड पर दृश्य बदलता रहता है। कभी मकान ऊँचे हो जाते हैं तो कभी छोटे। कभी कभी तुलसी बालक और भाई बलदेव को घोडों में बैठकर घुमाता है। दोनों को घुमाते समय तुलसी ब्रह्मचारियों के साथ बैठकर गुड खाता है और अष्टाध्यायी के सूत्र भी बोलता है। छुटटी के वक्त तुलसी इनके साथ डण्ड पेलता है।

लडके जब सडक पर गुल्ली–डण्डा खेलते हैं तो उन्हें शोर सुनायी देता है। गली से किसी औरत की आवाज आती है, "लोगों, मैं मारी गयी, बचाओ लोगो, मैं मारी गयी!"[24] एक औरत जमीन पर लेटी है और मनोहर का बाप उसकी छाती पर बैठकर उसे मार रहा है। जमीन पर पडा एक लोटा उठाकर उसके सरपर मार देता है। उस औरत का चेहरा लहुलूहान हो जाता है। मनोहर बाद में समझाता है कि, "हमारी नयी माँ बदमाश है न, इसलिए मेरे बाबूजी उसे पीटते है।"[25]

भाई बलदेव ब्रह्मचारियों की पाँत पीले रंग की धोती पहनकर स्वामीजी के पास बैठता है। बालकको पीली धोती बाँधने को नहीं दी गयी, इसलिए बालक को रोना आता है। आर्यसमाज में उपरवाली छत पर जहाँ ब्रह्मचारी रहते हैं वहाँपर बालक चुपके से जाता है और किसी अलमारी से पीले रंग की धोती निकालकर बाँधने की कोशिश करता है परंतु श्रम व्यर्थ ही जाते हैं। वह धोती बाँधने में असफल होता है। बालक की धोती बाँधने की इच्छा उसके यज्ञोपवीत के दिन पूरी हो जाती है। मंडप में बैठे लोगों को बालक भिक्षा माँगता है तो प्रत्येक व्यक्ति उसे इकन्नी, दुअन्नी का कोई सिक्का, नोट दे रहा है। जमा हुए सारे रुपये दोनों भाई

गुरुदक्षिणा के रुप में अपने गुरु को देते है। सभी लोगों के जाने के बाद मॉं और पिताजी में झगडा होता है। गुरु सारी दक्षिणा ले गया इस बात पर मॉं नाराज है। पिताजी उसे समझाते हैं कि गुरुदक्षिणापर गुरु का ही हक होता हैं। तो मॉं कहती है, "क्या हक होता है, मैं भी सुनूँ। अचारजी–पण्डित सब आठ–आठ आने लेते हैं। तुम आर्यसमाजी लोगों को नये चाले सिखा रहे हो। जाने पच्चास ले गया है या सौ ले गया है। पूरे के पूरे दोनों रुमाल जेबों में ठूँसकर चला गया है। लोगों ने शर्म–हया ही बेच खायी है। मैं तो मुए से पूरे–के–पूरे पैसे वापस लूँगी। जायेगा कहाँ।"[26] पण्डितजी बिना भोजन खाये चले गये इस बात से पिताजी अस्वस्थ है, परंतु सहसा तुलसी पण्डितजी को रास्तें में से पकडकर लाता है।

भाई गुरुकुल में पढना नहीं चाहता वह स्कूल में पढना चाहता है। पिताजी घर पर ही हिंदी और संस्कृत की व्यवस्था करते है। पिताजी भाई को दायी बगल में और बालक को बायीं बगल में लेकर बारी बारी से दोनों का सिर चूमते हैं, "तुम मेरी दायी आँख हो और यह मेरी बायी आँख है। फिर पीठ पर हाथ फेरते हैं, "तुम्हारा मन गुरुकुल से उचट गया है। मत पढो वहाँ, तुम स्कूल में पढो..."[27] इतना कहते पिताजी की आँखें भर आती है। घर के सामने जो मकान है उसका मालिक उसी वक्त छतपर आता है और कपडे उतारकर नंगा होता है जब विद्या और विमला छत पर जाती है। इस बात को लेकर मॉं गुस्सा होती है और पिताजी से कहती है कि वे विद्या ओर विमला की शादी जल्दी करे। परंतु पिताजी चाहते हुए भी अपनी असमर्थता व्यक्त करते हैं।

बचपन का वातावरण बहुत बदल गया है। हम दोनों भाईयों ने गुरुकुल जाना छोड दिया है। बडी बहन की शादी हो चुकी है। उसकी शादी में मैने बीस पान खाये थे। मेरे जीजाजी ने बताया कि बचपन में उनका एक दाँत टूट गया था तो उस दाँत की जगहपर जीभ फेरने के कारण उस जगह पर एक के पीछे एक दो दाँत उग आये थे। जो मुझे बहुत सुन्दर लगते थे। जीजाजी के कहने के अनुसार बालक भी अपने एक टूटे दाँत की जगहपर जीभ फेरता रहा लेकिन फिर भी दाँत दोहरा नहीं उग पाया। गर्मी के दिनों में एक दिन शाम को सभी खाना खाकर बाते करते बैठे है। भाई स्कूल का कोई किस्सा सुना रहा है। अचानक

अँधेरे में से तुलसी की आवाज आती है, "माताजी!" भाई चुप हो जाता है। माँ के पूछनेपर तुलसी धीरे से कहता है, "माताजी, क्या सारी उम्र मैं बरतन ही माँजता रहूँगा?" क्षण भर के लिए सभी का ध्यान तुलसी की ओर जाता है। फिर पिताजी तुलसी कहते है, "बरतन नहीं माँजेगा तो क्या करेगा ? सभी नौकर बरतन माँजते हैं या नहीं ? तेरे हाथों पर मेहंदी लगी है?"[28] तुलसी की बातपर माँ गुस्सा होती है। तुलसी को बर्तन नही माँजने देती। पिताजी माँ को भी डाँटते है तो माँ कहती है, "मैं चिल्ला-चिल्लाकर कहती थी, इसे मत पढाओ, नौकरों का क्या काम किताबों से । अब घर के काम से इसे चिढ़ हो गयी है।"[29] पिताजी माँ को फिर समझाते है, "कुछ पढ गया है तो बुरा क्या हुआ है? जब आया था जो जंगली जानवर था। तालीम इन्सान का जेवर होती है।"[30] आखिर माँ पिताजी को समझाती है कि तुम तुलसी को दफ्तर में काम के लिए रख लो। तुलसी अब पढने लिखने लगा है तो व्यापारियों से मिल आया करेगा और आपके काम में हाथ बटायेगा। परंतु इतना सब कुछ होने के बाद भी तुलसी फिर बर्तन माँजने लगता है। लेकिन माँ उसे बर्तन माँजने नहीं देती। तुलसी माँ के पैर पकडकर क्षमा माँगता है परंतु माँ राजी नहीं होती।

कुछ दिनों के बाद पिताजी तुलसी को गुरुकुल के औषधालय में नौकरी पर लगाते हैं। घर से तुलसी जा रहा है। माँ अत्यंत निराश होती है। तुलसी कंधे पर लाठी, बाये हाथ में गठरी उठाये, पगडी और कोट पहने एक पराये आदमी की तरह घर से जा रहा है। जाते समय माँ कहती है "अच्छा रब राखा। जहाँ रहे, सुखी रहे।"" तुलसी के जाने के बाद पिताजी कहते हैं, "गुरुकुल समाजवालों ने मेरे आदमी को रख लिया है, पर इनका कोई एतबार नहीं। बीसियों बार एहसान जतायेंगे।"[31]

घर में विद्या बहन ससुराल से आयी है। छोटी विमला बीमार है। इसीकारण घर का माहौल कुछ दु:खी है। घर में मौसी भी आयी है। विमला की तबीयत अचानक अधिक खराब होती है। पिताजी सबसे कहते हैं मन्त्र पढों, विमला राणी कहती है "मन्त्र पढो" और

पिताजी स्वयं लड़खड़ाती आवाज में मन्त्र बोलने लगते हैं :–

"तमीश्वरणां परमं महेश्वरं

तम् देवतानाम् परमं च दैवतम्..."[32]

मौसी, बुआ, विद्या, हम दोनों भाई सभी मन्त्र पढने लगे है। सभी लोग देर तक मन्त्र पढते रहते हैं। मन्त्रोच्चरण के बीच में ही पिताजी की कँापती आवाज आती है, "विद्या राणी, तेरी बहन चली गयी।" सभी रोने बिखलने लगते हैं। बडी बहन कुलबुलाकर रोती है। अचानक उसकी एक हल्की चीख सुनाई देती है। बडी बहन जोर जोर से चिल्ला रही है। उसे पकडकर उसके कमरे में ले जाते हैं। थोडी देर बाद कमरे में से किसी छोटे बच्चे के रोने की आवाज आती है। विद्या बहन ने एक बेटी को जन्म दिया है। पिताजी कहते हैं कि 'विद्या फिर लौटकर हमारे पास आयी है'। और पिताजी रोने लगते हैं। फिर पिताजी कहते है "बच्ची की जीभ पर 'ओम' लिखो। शहद से 'ओम' लिखो।" घर के वातावरण में पुनः बदलाव आ जाता है।

गुरुकुल समाज के औषधालय का दरवाजा बन्द है। बडा फाटक भी बन्द है। बन्द दरवाजे के ऊपर बडे बडे अक्षरों में लिखा है 'धर्मार्थ आर्य औषधालय।' तुलसी इसी औषधालय में काम करता है। सुबह के समय बालक बगल में एक गठरी उठाये औषधालय के फाटक से झाँककर देखता है। सामने की दीवार पर बरामदे की एक एक मेहराब के ऊपर अलग अलग रंगों में वेद के छोटे छोटे वाक्य लिखे है –

"सत्यं वद"

"धर्म चर"

"नायमात्मा बलहीनेन लक्ष्यः"

"दुर्गं पथस्तत कवयो वदन्ति"

"सत्यं ब्रुयात प्रियं ब्रुयात।"[33]

बालक तुलसी से मिलने औषधालय आया है। बालक जब तुलसी से मिलता है तो उसे आश्चर्य होता है। क्योंकि बालक सोच रहा था कि औषधालय में तुलसी डॉक्टर की तरह मरीजों को दवाईयाँ बाँट रहा होगा। परंतु औषधालय में वह कुछ और ही देखता है। वहाँपर तुलसी औषधालय की सीढियाँ धो रहा है। औषधालय में भी तुलसी घर का ही काम कर रहा था। वैद्यजी की पत्नी तुलसी के साथ एक नौकर सा व्यवहार करती है। वह चिल्लाकर कहती है, "जल्दी करना वहीं पर नहीं मर जाना।" वह दृश्य देखकर बालक सीधा तुलसी के कमरे में चला जाता है। वहाँपर तुलसी की पत्नी देवकी मिलती है। कुछ ही मुद्दत पहले तुलसी गाँव से शादी करके लौटा है। बालक कपडे की गठरी रखकर कहता है, "माताजी ने ये कपडे भेजे हैं।"[34] कमरे में एक एक ओर चटाई बिछाई है। उसके सामने कुछ चमचमाते बर्तन रखे हुए हैं, एक ओर मिट्टी का चूल्हा है। चटाई के दूसरी ओर कुछ किताबें दीवार के साथ फर्श पर पडी है। यह तुलसी का अपना घर है। थोडी देर बाद तुलसी कमरे में आता है और औषधालाय की सफाई के बारे में बातें करता हैं। उसकी पत्नी देवकी भी सीढियाँ धोना चाहती है, परंतु तुलसी उसे धोने नहीं देता। तुलसी को रोज बीस–पच्चीस बाल्टियाँ तो रोज भरनी पडती है। काम से उसे पढने के लिए वक्त ही नहीं मिलता। देवकी जब कपडों की गठरी खोलती है तो उसमें कुछ छोटे बच्चे के कपडे भी है जिन्हें देखकर देवकी शर्म से लाल हो जाती हैं। तुलसी घर पर था तो एक परिवार का नौकर था। अब यहाँ वह आर्यसमाज के बीसियों सदस्यों का नौकर है। जाते वक्त बालक जब तुलसी से पूछता है कि, "तुलसी, तुम वैद्य बन जाओगे?" तो तुलसी कहता है कि "वैद्यजी कभी पढाते है तो कभी नहीं। काम से वक्त ही नहीं मिलता।" आगे वह कहता है, "देवकी को गाँव में छोड आऊँगा। अपने लिये दो रोटियाँ सेंक लिया करूँगा। फिर शायद पढ पाऊँगा।"[35] तभी वैद्यजी तुलसी को थैला पकडाकर बोलते है कि मण्डी में जाकर थोडा सौदा सुफज ले आओ।

भाई छुट्टियों में घर आया है। वह कालेज में पढता हैं। कालेज की बाते सुनकर एक नयी दुनिया बालक के सामने खुलने लगती है। बालक अपने भाई से कहता है कि "मैंने भी शेव किया है।" दो दिन पहले बालक ने जब नये ब्लेड से शेव किया था तो बालक के

गाल छिल गये थे, ओर जगह जगह पर खून निकल आया था। बालक का वीर्यपात होने लगा है। यह बात पूरे घर को पता है। यह बात भी बालक अपने भाई को बताता है। भाई उसे हर चीज समझाता है खासकर औरत और हस्तमैथुन के संबंध में। भाई पूछता है "कितनी बार वीर्य गिर चुका है।" बालक कहता है तीन बार। भाई चिंतित स्वर में धीरे से कहता है, "मैं अपने प्रोफेसर साहब से पूछूँगा। जैसा कहेंगे, वैसा करेंगे। इन छुट्टियों में मैं तेरा वीर्यपात बंद करके जाऊँगा।"[36] बालक वीर्यपात रोकने के लिए अनेक उपाय करता है। लगभग 1600 कदम पैदल चलता है। सारी रात जागकर बिताता है। तो कभी ठंडे पानी से स्नान करता है।

बालक स्वप्नदोष की दवाई लेने तुलसी के पास औषधालय में जाता है। परंतु औषधालय में ताला लगा हुआ है। आत्मदर्शी जी बहुत गुस्सा करते हैं। एक एक को देख लेने की धमकी देते हैं। बालक औषधालय से चला जाता है। लेकिन स्वप्नदोष की चिंता उसे सताती रहती है। उसे मिलनेवाला हर कोई उसे पूछता है, "तुम किने दुबले हो गए हो।" बालक को लगने लगता है कि लोग उसकी तुलना उसके भाई बलदेव के साथ कर रहे हैं। भाई चरित्रवान है और मैं चरित्रहीन हूं, इसलिए साँवला हूँ। बालक चलते-चलते तौंगों अड्डों के पास जा पहुँचता है जहाँ शहर का गिर्जा है। वहाँ पर दो पेडों के बीच कपडे की पट्टी पर लिखा है, "दुनिया के दु:खी लोगों, मुझपर इमान लाओ, मैं तुम्हें आराम दूँगा।"[37] बालक वह पट्टी पढ ही रहा था और सोच रहा था कि गिर्जे के बडे पादरी के पास शायद स्वप्नदोष का कोई इलाज हो। अचानक वहाँपर उसका दोस्त कुलदीप आता है। बालक कुलदीप के साथ सिनेमा देखने जाता है। परंतु बालक को सिनेमाघर जाना अच्छा नहीं लगता। 'अमृत-बिन्दु' पुस्तक में साफ लिखा है, जिन लडकों का वीर्य गिरता हो, उन्हें सिनेमा नहीं देखना चाहिए। बालक सिनेमाघर से जाने के लिए उठता है तो कुलदीप उसे रोकता है। क्योंकि अब वहाँपर जिंदा नाच होनेवाला था। सिनेमाघर से बाहर आनेपर बालक के आँखों के सामने नर्तकी का सुन्दर चेहरा आने लगता है। सिनेमाघर में से निकलकर दोनों साइकलपर चले जाते हैं। थोडी दूरी पर जाने के बाद पैदल चलने लगते हैं। बालक कुलदीप से पूछता है "एक बात बताओ। सच सच बताना। तुम्हारा वीर्य गिरता है?"38 इस बातपर कुलदीप हँसता है। बालक

और भी गंभीर होता है। क्षुब्ध होकर कुलदीप से कहता है, "तू हँसे जा रहा है, तुझे नहीं मालूम कि वीर्य कितनी कीमती चीज है। इसे इसी कारण अमृतबिन्दु कहते हैं। चार सौ खून की बूँदों में से एक बूँद वीर्य की बनती है ओर रीछ की हड्डी में वीर्य जमा होता रहता है। अगर वीर्य गिरने लगे तो रीढ़ की हड्डी कमजोर पड जाती है। सारा शरीर कमजोर पड जाता है।"[39] बालक कुलदीप से अनेक प्रश्न करता है। कुलदीप उसपर हँसता है और कहता है – "चल हट, मुझे देर हो रही है। पागल कहीं का।... वीर्यपात के दिन गिनता है।" और वह साइकल पर बैठकर चला जाता है। बालक भी पागलों की तरह सिर झटकता घर की ओर चला जाता है।

अनेक सालों बाद बालक अपनी पढाई समाप्त करके लाहौर से गाँव वापस लौट आया है। ताँगा तेज रफ्तार से स्टेशन से घर की ओर जा रहा है। ताँगा इतना चौडा कि सीट पर टाँग फैलाकर बैठ जाओ तो इतना सन्तुलित कि मीलों चले जाओ, एक भी धक्का न लगे। एक लंबे अर्से के बाद बालक गाँव लौट रहा है। उसकी तरसती आँखे झाँक झाँककर अपने शहर को देख रही है। शहर का रुप बहुत कुछ बदल गया है। रेल का पूल जो बचपन में महाकाय नजर आता था अब मामूली सा नजर आ रहा है। सडके भी मानों सिकुड गई है। पहले से ज्यादा कम लम्बी, चौडी दीख रही है। दोपहर की धूप वैसी ही धुली–धुली खिली–खिली है जैसे पहले हुआ करती थी। ताँगेवाला पुराना मुहल्लेदार है – मुर्तजा। जब वह कहता है कि वह इस मुहल्ले में नहीं रहता जहाँ पहले रहता था। सुनकर बालक के दिल को चोट लगती है। मुहल्ले का बाबा नूरा अब मर गया है। पहले घोडों को नाल लगानेवाला बोस्तान अब मशीन से घोडों के बाल काट रहा है। शहर की सडकोंपर बिजली के खम्भे लग गये हैं।

घर पहुँचने पर माँ दरवाजा खोलती है। माँ का मुँह पोपला हो गया है। उसके मुँह में एक भी दाँत नहीं रहा है। पूछनेपर माँ बताती है, "मैंने दाँत निकलवा दिये हैं।" पिताजी हमेशा की तरह दफ्तर में बैठकर एक उँगली से टाइपराइटर पर चिठ्ठियाँ टाइप कर रहे हैं। उनके शरीर से वही बरसों की जानी–पहचानी महक आ रही है। पिताजी बालक को गले

लगाते हैं। उनका सारा सिर सफेद हुआ है। पिताजी बडे सुन्दर लग रहे हैं। भाई ने बाजार में भी एक दफ्तर किरायेपर लिया है जहाँपर भाई बैठता है। बालक घर देख रहा है तो माँ उससे कह रही है, "तेरा भाई तबदीलियाँ करवाता रहता है। उसे शौक है, तेरे पिताजी को तो न पहले शौक था न अब है। वह तो दिन-भर टाइपराइटर के सिरहाने बैठे रहते है।"[40] घर में तुलसी का नाम सुनकर बालक हैरान रह जाता है। तुलसी घर पर पुनः वापस लौट आया है। अब वह दरजी का काम कर रहा है। बालक के पुछनेपर माँ कहती है कि कब का लौट आया है, झगडे इन लोगों के आपस में पिस वह गया। पिताजी माँ से कहते है कि तुलसी को यहाँ से चलता करें। माँ कहती है, "दो दिन बैठने दो जी, बेरोजगार आदमी है, जब काम मिलेगा अपने-आप चला जायेगा।" फिर माँ मेरी ओर घूमकर कहती है, "भला हो तेरे भाई का। उसने विद्या की पुरानी सिलाई वाली मशीन इसे उठाकर दे दी। मैं होती तो कभी इतना हौसला नहीं कर पाती। अब छोटे-मोटे कपडे सी लेता है।"[41]

घर में नया नौकर आया है सुदामा। सुदामा बडी उम्र का दुबलापतला आदमी है। दाढी बढी हुयी है। पागलखाने से भागा आदमी नजर आता है। बालक जब पुनः तुलसी से मिलता है तो इसकी पत्नी के बारे में पूछता है। तुलसी क्षण भर के लिए चुप होता है और कहता है, "देवकी मर गयी है जी। प्रसूत में मर गयी थी। दूसरा बच्चा हुआ तो मर गयी।"[42] तुलसी बोझिल मन से अपनी कहानी बता रहा है। उसके दोनो बच्चे गाँव में भाई अमीचन्द के पास है। तुलसी ने संस्कारानुसार उनके आर्यसमाजी नाम रखे है। लडके का नाम 'वेद' और लडकी का नाम 'शान्ति' रखा है। वेद बडा है और शान्ति छोटी है।

पिताजी फिर तुलसी को चिठ्ठियाँ देकर डाकखाने भेजते हैं। गली में किसी के बोलने की ऊँची आवाज आती है। यह तो भाई की आवाज है। माँ घबराकर नीचे आयी है - "जैसा बाप वैसा बेटा। न जाने किससे उलझ रहा है।"[43] घर में कदम रखते ही भाई बालक की कमर में हाथ डालकर कहता है की उसेन अबनाशी राम की मुँछे उखाड दी है। कालिन प्रबन्ध समिति में दो पार्टियाँ है। एक पार्टी का मुखिया अबनाशी राम है। हाल ही में गाँव में चुनाव

हुआ है और इसी चुनाव की चर्चा भाई कर रहा है। बालक अपने सभी दोस्तों के बारे में भई से पुछताछ करता है। भाई और बालक दोनों मिलकर एक तालाब पर तैरने को जाना तय करते हैं। व्यापार के संबंध में भी भाई बताता है। 'चाभी', 'मारका लठ्ठा', '57 मारका लठ्ठा आदि के बारे में बताता है। दोनों साइकलों पर 'कोहमरी' जानेवाले हैं। इसलिए भाई रमेश की साइकल लाने घर से निकल जाता है।

जिन्दगी की असल दौड कहाँ से शुरु होती है, कौन–सा मोड काटो तो लड़कपन पीछे छूट जाता है और जवानी शुरु हो जाती है? कौन कह सकता है कि इस मोड के पीछे जो कुछ था वह धूमिल और अस्पष्ट था, महत्वहीन था, पर जो कुछ आगे होगा वह बिलकुल साफ होगा, महत्वपूर्ण होगा? क्या बचपन में धूल उडती रहती है तो जवानी में नहीं उडती और क्या वह मृत्युपर्यंत नहीं उडती रहती?"[44] सब कुछ अनिश्चित रहता है। बलदेव का मन व्यापार में नहीं लगता है। इसलिए अपनी सारी जिम्मेदारियाँ छोटे भाई के कंधे पर डालकर बाहर जाने की तैयारी कर रहा है। पिताजी की सिफारिश से तुलसी को बैंक में नौकरी मिल जाती है। परंतु अपनी पुरानी आदत के कारण तुलसी बैंक में भी किसी कारण अपनी बाजू काट खाता है। धीरे–धीरे बैंक का कामकाज शुरू होता है। तुलसी अभी भी खजांची के कटहरे के नीचे एक ओर को, घुटनों में अपना सिर दबाये बैठा है। खजांची अपने कटहरे में कहता है, "उठ, एक गिलास पानी ले आ।" वह फिर कहता है "यह थूथना क्यों सूजा हुआ है तेरा? क्या बात हुई है? जरा हाथ हिलाया कर, चुस्ती से काम किया कर।"[45] बैंक से भी तुलसी की नौकरी चली जाती है।

भाई बलदेव घर से बाहर जाने की सोच रहा है। वह व्यापार नहीं करना चाहता। वह स्वतंत्र रुप से बाहर जाकर कुछ करना चाहता हैं। पिताजी उसे बहुत समझाते हैं परंतु भाई कुछ सुनता नहीं। पिताजी उसे कहते है, "व्यापार में जितने हाथ फैलाओ, फैल सकते है। मैं तो अकेला था, गरीब था, मेरी तो मदद करनेवाला कोई नहीं था, तुम्हें किस बात की कमी

है?"[46] पिताजी आगे कहते है, "एक है जो माँओं को तरसते हैं, दुसरे हैं, जो सौतेलियों को तरसते हैं।" पिताजी के इस वाक्य का अर्थ बालक आज तक नहीं समझ पाया, पर पिताजी बार बार इस वाक्य को दोहराते हैं। पिताजी के समझाने पर भी भाई टस से मस नहीं होता। फिर पिताजी अपने दोनों हाथ भाई के सामने फैलाते है। उनके हाथों में ऐक्जीमा फूट निकला है, जो कुछ बरसों से उन्हें परेशान कर रहा है। पिताजी हाथ भाई के सामने फैलाकर कहते हैं, "तेरे दिल में दर्द मर गया है? तू यह भी नहीं देख सकता?"[47] माँ पिताजी पर गुस्सा होती है और कहती है, "देखो जी, मैं बेवकूफ, अनपढ़, आप लोग दोनो, सियाने, अक्लमन्द। पर सीधी–सी बात है। बच्चा व्यापार नहीं करना चाहता तो तुम जबरदस्ती क्यों करते हो? तुमने अपना फर्ज निभा दिया है। इन्हें अच्छा पढा दिया है, अपने पैरों पर खडा होने लायक बना दिया है। अब जो आगे इनकी किस्मत।"[48] पिताजी खामोश हो जाते है। भाई चला जाता है। व्यापार का सारा भार बालक के कंधे पर आ जाता है।

बैंक से नौकरी छूटनेपर तुलसी गाँव चला जाता है। कुछ दिनों बाद अपने बेटे को लेकर वापस घर आता है। वह चाहता है कि उसका बेटा वेद, उसी घर में रहे जहाँ उसने अपनी सारी जिंदगी गुजारी है। पिताजी को जब इस बात का पता चलता है तो वह कहते है, "नाम भी न लो। पहले ही वह घर से निकलने का नाम नहीं लेता। हर तीसरे दिन यहाँ पहुँच जाता है। अब फिर 'चिचडी' की तरह चिपट जायेगा। चलता करो इसे। तुम लोग नहीं करोगे तो मैं इसे कह दूँगा।"[49] बलदेव और बालक ने एक योजना बनाई है। दोनों महीने भर साथ साथ रहेंगे, घूमेंगे–फिरेंगे।

बरसों से हर साल जैसी चाँदनी छिटक जाती है वैसी ही चाँदनी छिटक आयी है। मुहल्ले में चौका–बर्तन निबटाने के पहले की आवाजें आ रही है। पिछवाडे में किसी आदमी को प्यास लगी है ओर वह सुराही में से पानी उँडेल रहा है। छतों पर सोने के लिए खाट बिछाये जा रहे है। पिछवाडे में दो घर छोड, तीसरेघर की छत पर से किसी पुराने खेल की आवाजें आ रही है। बच्चे गा रहे हैं –

"फूलों में हम आते हैं,

ठण्डी मौसम में, ठण्डी मौसम में ।

तुम किसको लेने आते हो, आते हो!

ठण्डी मौसम में!"[50]

आवाजें बाबू ईश्वरदास के घर की छत पर से आ रही है। विद्या बहन का बेटा राजीव वहाँ खेलने गया है। उसकी देखभाल के लिए तुलसी का बेटा वेद भी उसके साथ है। बच्चों की आवाजों में मैं राजीव की आवाज पहचानने की कोशिश कर रहा हूँ।

झरोखे उपन्यास में जिस सामाजिक परिवेश में जीवित और व्यावहारिक मान्यताओं का विश्लेषण किया गया है, वह किसी सिध्दांत को आधार बनाकर नहीं, बल्कि इस बात को दिखाने की कोशिश की है कि हमारे नैतिक बोधपर, धर्म किस तरह भारी पडता है। जब कि सच्चाई यह होती है कि इस बाह्य–आडंबर के चलते व्यक्ति वास्तविक सामाजिक गुणों से वंचित हो जाता है। उसके सामाजिक संबंध तथा मानवीय संबंध संकीर्ण अर्थ में जातीय परिपाटी के अंधानुकृत रुप हुआ करते है। 'झरोखे' उपन्यास में इन्हीं संकीर्णताओं की जाँच–पडताल की गयी है।[51]

आजादी के पहले का पंजाब और साम्प्रदायिक दंगों के दहशत में डूबे वे कुछ दिन। धार्मिक जडता को इस्तेमाल करती अंग्रेजों की कुटिल राजनीति। उस राजनीति के कारण लहूलुहान हजारों बेकसूर लोग, सुअर और गाय को बचाने का पुण्य और उसी के लिए होती हुई मनुष्य–हत्याएँ, पर्दे के पीछे दंगा करानेवाले अंग्रेजों के दिमाग, और रू–ब–रू कटते मानव शरीर! यह एक माहौल है, जिसे साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त उपन्यास 'तमस' में गहरे इतिहासबोध सहित भीष्म साहनी जी ने प्रस्तुत किया है।

'तमस' उपन्यास का कथ्य :-

आले में रखे दीये ने फिर से झपकी ली। ऊपर, दीवार में, छत के पास से दो ईंटे निकली हुई थीं। जब-जब वहाँ से हवा का झोंका आता, दीये की बत्ती झपक जाती और कोठरी की दीवारों पर साये से डोल जाते। थोडी देर बाद बत्ती अपने-आप सीधी हो जाती और उसमें से उठनेवाली धुएँ की लकीर आले को चाटती हुई फिर से ऊपर की ओर सीधे रुख जाने लगती। नत्थू का साँस धौंकनी की तरह चल रहा था और उसे लगा जैसे उसके साँस के ही कारण दीये की बत्ती झपकने लगी है।[52]

नत्थू गाँव का चमार है। यद्यपि वह सुअर मारने का काम कभी नहीं करता था। लेकिन मुरादअली जो अंग्रेजों का पोशिंदा था, एक सुअर अपने साहब के डाक्टरी परीक्षण के लिए ले जाना चाहता था। वह स्वयं तो यह कार्य नहीं कर सकता था। इसलिए मुरादअली ने यह कार्य नत्थू के हाथ सौंपा और बक्षिस के रुप में पाँच रुपये का कड़कता नोट भी नत्थू के हाथ में दे दिया। जाते वक्त नत्थू से कह गया कि, "इधर इलाका मुसलमानी है। किसी मुसलमान ने देख लिया तो लोग बिगडेंगे। तुम भी ध्यान रखना। हमें भी यह काम बहुत बुरा लगता है, मगर क्या करें, साहिब का हुक्म है, कैसे मोड दें।"[53] मुरादअली छडी को टाँगो पर ठकोरता उसके पास से निकल गया था।

किसी तरह नत्थूने सुअर को कोठरी में बंद तो कर दिया परंतु वह पिछले दो घण्टों से उस बदरंग, कँटीले सुअर के साथ कोठरी में जूझ रहा था। सुअर को मारने का प्रत्येक प्रयत्न उसने किया था लेकिन सुअर को मारने में वह असफल रहा। चोरी का सुअर मारना उसे काफी कष्टप्रद लग रहा था। अनेक प्रयास करनेपर भी जब वह सफल नहीं हुआ तो काम छोडकर जाने की सोचने लगा। उस अलसाई रात में अपनी औरत का बदन याद करके नत्थु सिहर उठता। जी में आता काम वहीं छोडकर घर जाएँ और अपनी औरत को बाँहों में भर ले। परंतु मुरादअली का दिया हुआ पाँच का नोट उसकी आँखों के सामने झूम जाता। बहुत देर तक प्रयास करने के बाद नत्थु ने पूरी ताकद लगाई और वह किसीतरह सुअर को मारने में सफल हो गया। काम खत्म होनेपर नत्थू ने चैन की साँस ली।

कॉंग्रेस कमेटी द्वारा शहर में प्रभातफेरी निकाली जानेवाली है। बख्शी जी, अजीज मेहता जी, देसराज, शंकर, मास्टर रामदास, कक्कड इंसाने जनरैल और कश्मीरी लाल आदि कमेटी सदस्यों को पूर्व संध्या में ही कह दिया जाता है कि दूसरे दिन प्राय: चार बजे प्रभातफेरी के लिए उपस्थित रहे। कमेटी के अध्यक्ष है मेहताजी और सचिव है समय के पाबंद बख्शीजी। प्रभातफेरी के लिए प्रात: चार बजे पहुँचता है अजीज। दूर अँधेरे में कोई आदमी हाथ में हरीकेन लॅम्प लेकर आ रहा था। हरीकेन के प्रकाश में लग रहा था जैसे धड के बिना दो टाँगे चली आ रही है। समय के पाबंद बख्शी जी को देर से आते देखकर उनके नजदीक आते ही अजीत शेर गुनगुनाता है –

"मुल्ला मियाँ मिशालची, तीनों एक समान;
लोकाँ नूँ दस्सण चाणना, आप हनौ जाण।"[54]

यह शेर सुनते ही बख्शीजी अपनी सच्चाई में कहते है कि, "रात देर से सोने के कारण सुबह नींद नहीं खुली। बख्शीजी के आने के बाद अन्य सदस्य भी धीरे धीरे आ पहुँचते है। सदस्य एक दूसरे की पोल खोलते हैं। उनकी बातें सुनकर लगता है जैसे कॉंग्रेसी ऊपर से कुछ और अंदर से कुछ है। मास्टर रामदास कॉंग्रेस कमेटी के कामों के लिए वेतन लेता है, परंतु फिर भी देर से पहुँचता हैं। कमेटी के और एक सदस्य जनरैल सभी सदस्यों से अलग और मुँहफट इंसान है। कुछ पता नहीं चलता था कि वे जो फॅटे जूते पहनते थे वे जूते थे या स्लीपर। जूतों के छ: इंच ऊपर खाकी पतलून पहनते थे। उसपर खाकी कोट जिस पर गांधी और नेहरु के जितने तमगे मिलते लगाये थे। ऊपर खसखस दाढी नुची–खुची और सर पर मूंगिया रंग की पगडी। एक ऐसा सदस्य जिसके न आगे कोई और न पिछे। किसी को कुछ भी कहना और हफ्ते में दो–तीन बार किसी के हाथों से पीट जाना, मुहल्ले–मुहल्ले घूमकर लोगों से सुख दुख की बातें करना, यही जनरैल का व्यक्तित्व था। जब भी जनरैल कमेटी में पहुँचता किसी न किसी से उनकी नोंकझोंक शुरु हो जाती।

जनरैल के पहुँचते ही कश्मीरीलाल कहता है, "जनरैल, कल जलसे में से भाग क्यों गये थे?" बख्शीजी उसे रोकते है, परंतु जनरैल कश्मीरी से कहता है, "मैं तुम्हारा पर्दाफाश करूँगा। तुम्हारा कम्युनिस्टों के साथ उठना बैठना है। मैं जानता हूँ। देवदत्त कम्युनिस्ट के साथ कुबडे हलवाई की दूकान पर मैंने तुम्हें छानामुर्गी खाते देखा है।"[55] बख्शीजी दोनों को समझाकर चुप करते हैं। यह सब कुछ हो रहा था कि चौडे पाइयोंवाला पाजामा फडफडाते हुए शंकरलाल आते हैं।

अँधेरा थोडा कम होने के कारण बख्शीजी ने फूँक मारकर लैम्प की बत्ती बुझा दी। "क्यों हम पहुँचे हैं बख्शीजी तो आपने बत्ती ही गुल कर दी।" शंकरलाल कहते हैं, "क्यों, तूने मेरा चेहरा देखना हैं या मेहताजी का देखना है?" बख्शीजी बोले – "तेल जाया होता है। यह कँाग्रेस कमेटी का लैम्प नहीं है मेरा अपना लैम्प है। कँाग्रेस कमेटी से तेल की मंजूरी ले दो, मैं इसे दिन–रात जलाये रखूँगा।"[56] इसपर दबी आवाज में शंकर बोला, "सिगरेटों के लिए आपको मंजूरी की जरुरत नहीं तो मिट्टी के तेल के लिए क्यों होगी।"[57] इसी तरह शंकर और मेहता में भी विवाद होता है। मेहता जी कमेटी के अध्यक्ष थे, परंतु साथ ही साथ बीमा एजेंट के रुप में भी कार्य करते। कमेटी के काम से जहाँ जहाँ जाते वहाँ पर बीमा के लिए नये मुर्गे की तलाश में रहते। शंकर से तो बख्शीजी की पुरानी लड़ाई थी। लाहौर में होनेवाले कांग्रेस सम्मेलन में से शंकर का नाम सूची से काट दिया था। उस सम्मेलन को मेहताजी संबोधित करनेवाले थे। सूची से नाम काट दिया जाने पर भी शंकर सम्मेलन में गया था। तभी से दोनों में झगडे होते रहते थे।

सभी सदस्य एक दूसरे की पोल खोलने में कार्यरत हैं। इसी बीच किसी को ध्यान नहीं है कि प्रभातफेरी निकालनी है। बख्शीजी परेशान हो रहे थे। प्रभातफेरी निकलने में विलंब हो रहा था और इतनी देर होनेपर भी न मास्टर रामदास आया था और न देसराज। ये दोनों गायक थे और प्रभातफेरी में किसी एक गायक का होना आवश्यक था। बख्शीजी कह रहे थे, "देख लेना मेहता जी, हम प्रभातफेरी शुरु कर देंगे। तीन गलियाँ लाँघ जायेंगे तो

मास्टर रामदास दौडा आयेगा। कहेगा बछडा दूध पी गया था, मैं क्या करता। इस तरह ये लोग काम करते हैं।"[58] लेकिन कश्मीरीलाल ने जनरैल को तकरीर शुरु करने के लिए कहकर और मुसीबत पैदा कर दी। मास्टर रामदास तो गये लेकिन जनरैल की तकरीर तो खत्म हो नहीं रही थी। बख्शीजी के कहनेपर जनरैल ने किसी कदर बोलना बंद किया तो मास्टर रामदास ने सभी को गोसाइजी का निर्णय सुनाते हुए कहा कि आज इमामदीन के मुहल्ले के पिछे ढोक में गलियाँ साफ करेंगे। कश्मीरीलाल को जब पता चला कि उन गलियों में बरसों का लसलसा कीच जमा है तो वह मुकर गया। इसपर जनरैल ने कहा कि "तुम गद्दार हो, गलियाँ हम साफ करेंगे।" बख्शीजी के कहनेपर सभी वहाँ से निकल पडे। रामदास ने प्रभातफेरो का पुराना गीत अपनी ऊँची, बेसुरी आवाज में शुरु किया :

"जरा वी लगन आजादी दी
लग गयी जिन्हाँ मन दे विच।"

बाकी की मंडली ने पंक्तियाँ दोहरा दी। रामदास ने अगली दो पंक्तियाँ उठायी :

"ओह मजनूँ बण फिरदे ने
हर सेहरा हर बन दे विच।"[59]

मंडलीने कुतुबदीन की ढोक का रुख किया।

सारी रात सुअर से जूझता नत्थू जब अपनी गली में पहुँचा तो उसने चैन की साँस ली। उसे बडा आराम महसूस हुआ। सुबह होनेवाली थी और सुबह की दैनिक क्रियाएँ प्रत्येक घर में शुरु हो चुकी थी। फकीर रोज की तरह इकतारा लिए गा रहा था। कोई जानवरों को साना-पानी कर रहा था, तो किसी घर से बर्तनों की आवाज आ रही थी। सुबह-सुबह कुछ लोग माथा नवाने मंदिर व गुरुद्वारे में जा रहे थे।

नत्थू अब गाडीवानों का मुहल्ला पार करके इमामदीन के मुहल्ले के बाहर 'कमेटी' के मैदान के किनारे से चल रहा था। इस मैदान में सदा कुछ न कुछ कार्यक्रम उत्सव होता रहता था। कुत्तों की लडाई हुआ करती थी, नेआबाजी हुआ करती थी, ताराबाई तथा परशुराम

की सरकस होती थी, बैसाखी का ढोल बजता था। इसी मैदान पर कभी दंगे भी होते थे। वहाँ पर मुस्लिम लीग तथा बेलचा पार्टी के जलसे होते थे। नत्थू उस मैदान की ठण्डी-ठण्डी रेलिंग पर बैठकर बीडी पीने लगा। बीडी पीते-पीते उसे अचानक याद आया कि मुरादअली यहाँपर ही आसपास कहीं रहता है। मुरादअली के बारे में सोचकर नत्थू ने विचार किया कि वहाँ से चल देना ही बेहतर होगा। कहीं मुरादअली ने देख लिया तो बिगडेगा। नत्थू मुरादअली के बारे में ही सोच रहा था, तभी सामने से आठ दस लोग गांधी टोपी पहने सामने से गुजरे। उनमें से एक आदमी ने नारा लगाया :

"कौमी नारा।"

"वंदे मातरम।"

"बोल भारतमाती की – जय।"

"महात्मा गांधी की – जय।"

तभी एक क्षणभर की चुप्पी के बाद दूसरी गली से पाकिस्तान का भी नारा गूंजा :

"पाकिस्तान – जिन्दाबाद।

पाकिस्तान – जिन्दाबाद ।

कायदे आजम – जिन्दाबाद ।

कायदे आजम – जिन्दाबाद।"[60]

उनमें से एक आदमी मण्डली को ललकारता हुआ बोल रहा था, "कांग्रेस हिन्दुओं की जमात है। इसके साथ मुसलमानों का कोई वास्ता नहीं है।" इसपर मण्डली की ओर से बडी उम्र का आदमी जवाब देते हुए बोल, "कांग्रेस सबकी जमात है। हिन्दुओं की, सिक्खों की, मुसलमानों की। आप अच्छी तरह जानते है महमूद साहिब, आप भी हमारे साथ ही थे।" दोनों मण्डली के लोग एक दूसरे के सामने खडे थे। वयोवृद्ध आदमी बोल रहा था, "वह देख लो, सिक्ख भी हैं, हिन्दू भी है, मुसलमान भी है। वह अजीज सामने खडा है, हकीमजी खडे हैं।"[61]

"अर्जीज और हकीम हिन्दुओं के कुत्ते हैं। हमें हिन्दुओं से नफरत नहीं, इनके कुत्तों से नफरत हैं।"

नत्थू समझ गया कि बात बिगड चुकी है। मुरादअली ने भी देख लिया तो पुछेगा कि सुअर मारा या नहीं, साहब के यहाँ पहुँचा है या नहीं । इसलिए नत्थू पीठ पीछे करके उठा और तेज चलते हुए गली से बाहर निकलकर सरपट भागने लगा।

रिचर्ड शहर का डिप्टी कमिश्नर है और लीजा उसकीपत्नी है। लीजा को हिन्दुस्थान अच्छा नहीं लगता। इसकारण लीजा बार-बार इंग्लैंड चली जाती है। इस बार वह छः महिने के बाद लौटकर आयी है। और रिचर्ड नहीं चाहता कि वह वापस इंग्लैंड जाये। रिचर्ड लीजा के मूड को बनाए रखना चाहता है। इसलिए रिचर्ड लीजा को पहाड की तलहटी में होनेवाले एक पिकनिक स्पॉटपर ले जाना चाहता है, परंतु चाहकर भी वह उसे उस स्पॉट पर नहीं ले जा सकता क्योंकि वहाँ पर हिंदू और मुस्लिमों में तनाव बना हुआ है। लीजा ने हिन्दुओं और मुसलमानों की स्थिति के बारे में सुन रखा था, लेकिन इनके बारे में वह जानती बहुत कम थी। "मैं तो अभी तक हिन्दू और मुसलमान को अलग-अलग से पहचान भी नहीं सकती। तुम पहचान लेते हो रिचर्ड, कि आदमी हिन्दू है या मुसलमान?"[62] रिचर्ड हिन्दू मुसलमानों के बारे में बहुत बाते जानता है। दोनों को कैसे पहचाना जाता है यह बात भी वह लीजा को बताता है। "बडा आसान है, लीजा। मुसलमानों के नामों के अन्त में अली, दीन, अहमद ऐसे-ऐसे शब्द लगे रहते हैं जबकि हिन्दुओं के नामों के पीछे ऐसे शब्द जैसे लालचन्द, राम, लगे रहते हैं। रोशनलाल होगा तो हिन्दू, रोशनदीन होगा तो मुसलमान, इकबालचन्द होगा तो हिन्दू, और इकबाल अहमद होगा तो मुसलमान।"[63]

रिचर्ड अत्यंत चतुर प्रशासक है। अपनी कुटिल राजनीति द्वारा ही वह हिन्दु-मुसलमानों में दंगे करवाता है, परंतु यह असली बात वह लीजा को नहीं बताता फिर भी लीजा समझ जाती है। रिचर्ड कहता है, "धर्म के नाम पर आपस में लडते हैं, देश के नाम पर हमारे साथ लडते हैं।" "बहुल चालाक नहीं बनो, रिचर्ड। मैं सब जानती हूँ। देश के नाम पर ये लोग तुम्हारे

साथ लडते हैं और धर्म के नाम पर तुम इन्हें आपस में लड़ाते हो। क्यों, ठीक है ना?"[64] रिचर्ड को अपनी पत्नी का भोलापन अच्छा लगता है। झुककर वह लीजा का गाल चूमता है – "डार्लिंग, हुकूमत करनेवाले यह नहीं देखते कि प्रजा में कौन–सी समानता पायी जाती है, उसकी दिलचस्पी तो यह देखने में होती है कि किन–किन बातों में एक–दूसरे से अलग है।"[65] हिन्दू–मुसलमानों के बीच तनाव को जानकर लीजा कहती है, "तुम उनका झगडा निपटाओगे नहीं?" रिचर्ड मुसकरा दिया और कॉफी का घूँट भरकर सहज भाव से बोला, "मैं उनसे कहूँगा तुम्हारे धर्म के मामले तुम्हारे निजी मामले हैं, इन्हें तुम्हें खुद सुलझाना चाहिए। सरकार तुम्हारी मदद करने के लिए पूरी तरह से तैयार है।" "तुम उनसे यह भी कहना कि तुम एक ही नस्ल के लोग हो, तुम्हें आपस में नहीं लडना चाहिए। तुमने मुझे यही बताया था न रिचर्ड?" "जरुर कहूँगा, लीजा।" रिचर्ड ने तनिक व्यंग्य से कहा। दोनों चुपचाप कॉफी के घूँट भरते रहे, फिर सहसा लीजा का चेहरा चिन्तित हो उठा, "तुम्हें तो कोई खतरा नहीं है ना, रिचर्ड?" "नहीं, लीजा। अगर प्रजा आपस में लडे तो शासक को किस बात का खतरा है।" लीजा के जेहन में बात उतरी तो उसकी आँखों में रिचर्ड के प्रति आदरभाव छलक आया।[66]

लीजा जानती है कि अंग्रेज अपनी राजनीति के बलपर हिंदुस्थान में हुकूमत कर रहे हैं। लेकिन उसे यह सब अच्छा नहीं लगता। लीजा का नारी हृदय संवेदनशील है। उसे भय है कि कहीं हिंदुस्तानी जनता भडक उठी तो अकेल रिचर्ड क्या करेगा। लेकिन रिचर्ड उसे आश्वस्त करता है। लीजा को रिचर्ड की काबिलियत पर विश्वास है।

उधर प्रभातफेरी के सभी सदस्यों ने गोसाईजी की बात मान ली और कांग्रेस कमेटी के सभी सदस्य इमामदीन मोहल्लों की नालियों की सफाई में जुट गए। हल्के से हँसकर मास्टर रामदास बोला, "ब्राह्मणों से भी झाडू उठवाते हो गांधी महात्मा, जो करो थोडा। हैं जी ! ब्राह्मणों के हाथ में भी झाडू उठवा दिया।"[67] मेहता और काश्मीरीलाल बेलचे उठाये और नाली साफ करने चल पडे। शेरखान, देसराज, बख्शीजी झाडू उठाकर आँगन बुहारने लगे। सफाई

का काम चल ही रहा था कि अचानक एक आदमी कमेटी मैदान की ओर से भागता हुआ आया और मुहल्ले के कुछ लोगों के पास जाकर खुस–फुस बातें करने लगा। देखते देखते लोग इधर–उधर हो गए। सभी अपने अपने घर में चले गए। सन्नाटा सा छा गया। कांग्रेस कार्यकर्ता हैरान थे कि क्या बात हुई है। तभी एक आदमी आकर बोला, "आप साहिबान यहाँ से चले जाइए। अगर अपनी खैरियत चाहते हो तो यहाँ से फौरन चले जाओ।" बख्शीजी ने सोचा कि शंकर या काश्मीरीलाल ने मुहल्ले के किसी को कुछ कहा होगा जो मुहल्लेवालों को बुरा लगा है। तभी एक पत्थर बख्शीजी के पास आकर गिरा। उसके बाद दो–तीन पत्थर एक के बाद एक आकर गिरे। एक तो सीधा रामदास के कन्धे पर लगा। कार्यकताओं की मण्डली वहाँ से निकलने लगी। गली के बाहर एक मस्जिद थी। जिसे केलों की मस्जिद कहा जाता था। मस्जिद की सीढी पर कोई काली काली चीज पडी थी। "कोई आदमी सुअर मारकर फेंक गया है।" सभी मस्जिद की ओर देखने लगे। मस्जिद की सीढी पर एक काले रंग का बोरा सा नजर आया। उसमें से दो टाँगे बाहर निकली थी। सभी कह रहे थे कि यहाँ से निकल जाये। बख्शीजी बोले, "पर यहाँ से निकल जायेंगे तो मामला नहीं बढेगा? क्या मुसलमान लोग इस लाश को यहाँ से हटायेंगे?"[68] बख्शीजी ने अपना लालटैन एक घर के चबूतरे पर रखा और मेहता की ओर देखकर बोला, "मेहताजी, आप क्या कह रहे हैं? हम चुपचाप यहाँ से निकल जायें और तनाव को बढने दें? अपनी आँखों से न देखा होता तो दूसरी बात थी"। फिर कश्मीरीलाल और जनरैल को सम्बोधन करके बोले, "तुम आ जाओ मेरे साथ।"[69] और वे गली में से निकलकर मस्जिद की ओर जाने लगे।

सुअर को वहाँ से हटाना जोखिम भरा काम था। बख्शी और जनरैल ने सुअर को टाँगों से पकडकर उसकी लाश मस्जिद की सीढी से उतारकर घसीटते हुए सडक के पार ले गए और ईटों के एक ढेर के पीछे धकेलकर छिपा दिया। सभी सुअर को भंगीद्वारा वहाँ से भी हटाने की सोच रहे थे कि वहाँ कुएँ की ओर से एक गाय भागती आ रही थी। उसके पिछे एक आदमी भी भाग रहा था । चिकनी खाकवाली, बादामी रंग की गाय थी। लगता जैसे रास्ता भटक गयी है। मुँडासेवाले आदमी ने मुँह लपेट रखा था। गाय को हाँकता हुआ वह

सडक पर से गुजरा और फिर उसे दायें हाथ एक गली की ओर ले गया। बख्शीजी धीरे से बोले, "लगता है शहर पर चीलें उडेंगी। आसार बहुत बुरे हैं।"[70] उनका चेहरा और अधिक गम्भीर और पीला लगने लगा।

शहर की स्थिति सचमुच बिगड चुकी थी। वानप्रस्थजी के मार्गदर्शन में शहर में साप्ताहिक सत्संग चलता था। सारे सत्संग सभासदों में अकेले वानप्रस्थी जी ऐसे थे जो संस्कृत के ज्ञाता थे। शहर का वातावरण बिगड जाने के कारण वानप्रस्थीजी का सत्संग भी "हिंदू बचाओ" रक्षा अभियान में परिवर्तित हो गया। सत्संग समाप्त होने के बाद वानप्रस्थीजी सभी को मन्दिर के पिछवाडे एक कमरे में ले गये। कमरे में सभी लोग बैठ गये। पुण्यात्माजी धीर–गम्भीर आवाज में बोले, "सबसे पहले अपनी रक्षा का प्रबन्ध किया जाना चाहिए। सभी सदस्य अपने घर में एक–एक कनस्तर कडवे तेल का रखें, एक–एक बोरी कच्चा या पक्का कोयला रखें। उबलता तेल शत्रु पर डाला जा सकता है, जलते अंगारे छत पर से फेंके जा सकते हैं...."[71] इसप्रकार सारे सदस्य मंत्रीजी, देवव्रत, लालाजी, दानवीर प्रधान आदि इस बात पर विचार कर रहे थे कि अपना बचाव और मुसलमानों पर आक्रमण किस तरह किया जाए। चर्चा चल रही थी तभी एक वयोवृध्द सज्जन बोले कि डिप्टी कमिश्नर से जाकर मिलो और इस समस्या का हल ढूँढो। तभी एक सिख सज्जन बोले, "सुना है एक गाय भी काटी गयी है। भाई सत्तो की धर्मशाला के बाहर उसके अंग फेंके गये हैं। मैं नहीं जानता कहाँ तक यह खबर ठीक है, लेकिन सुनने में जरुर आया है।"[72] मन्त्रीजी कहते है, "गोवध हुआ तो यहाँ खून की नदियाँ बह जायेंगी।"

देर तक उपायों और साधनों पर विचार होता रहा। रक्षा सम्बन्धी उपाय और दंगा रोकने सम्बन्धी उपायों पर विचार होता रहा। अनेक विचार पेश किये गये। मुहल्ला–कमेटियाँ बनायी जायें, वालण्टियरकोर बनायी जाये जो हिंदू–मुस्लिम संगठन के बीच सम्पर्क रखे, कडवा तेल, रेत, पानी, कोयले का इन्तजाम, डिप्टी–कमिश्नर से मिलने का उपाय आदि उपाय पेश किये गये, परंतु कमिश्नर से मिलने का उपाय किसी को भी नहीं रुचा।

आखाडा संचालक मास्टर देवव्रत के अनेक शिष्य थे। परंतु उन सभी शिष्यों में प्रधानजी का बेटा रणवीर देवव्रत के काफी करीब था। मास्टर देवव्रत कुछ ऐसे लडके तैयार करना चाहता था, जो किसी भी वक्त तूफानी हमला करके सामनेवाले को मार सके। इस काम के लिए देवव्रतजी ने रणवीर को चुना। वे रणवीर को लेकर एक कोठरी में गये। कोठरी में एक बडी टोकरी में पाँच–छह सफेद मुर्गियाँ बन्द थी। गोरखा एक हाथ में मुर्गी और दूसरे हाथ में छुरा लिये था। देवव्रतजी ने कहा, "इधर दीवार के पास बैठ जाओ रणवीर, और इस मुर्गी को काटो। दीक्षा से पहले तुम्हें अपनी मानसिक दृढता का परिचय देना होगा।"[73] रणवीर के हाथों में छुरा देकर उन्होंने मुर्गी के दोनों पंख एक दूसरे में खोंस दिये। मुर्गी जोर से कुडकुडाई। रणवीर के माथेपर पसीना आ गया और उसका चेहरा पीला पड गया। मास्टरजी समझ गये कि उसे मतली आनेवाली है। मास्टर देवव्रतजी ने चिल्लाकर रणवीर को एक जोर का थप्पड मारा जिससे रणवीर दोहरा होकर जमीन पर जा गिरा। "उठो रणवीर, इसमें कुछ भी मुश्किल नहीं है। लो, मैं तुम्हें दिखाता हूँ। ऐसा कहकर देवव्रतजी ने छुरी एक ही बार मुर्गी के गले पर फेर दी, मुर्गी का सिर अलग हो गया। रणवीर थोडी देर हाँपता रहा। पाँच मिनट के बाद देवव्रतजी कोठरी में आये तो रणवीर ने एक मुर्गी को मारा था। रणवीर ने बडी कटिनाई से मुर्गी को मारा था। रणवीर परीक्षा में उत्तीर्ण हो गया था। मास्टरजी ने कहा, "शाबाश। तुममें दृढता है, संकल्प शक्ति है, भले ही हाथ में ताकद अधिक नहीं है। तुम दीक्षा के अधिकारी हो।"[74] बाकी के सदस्यों के साथ रणवीर जहरीले बाण और तेल गर्म करने की योजना में पूरी तरह से लग जाता है। रणवीर पहले से काफी दबंग हो जाता है। अब कुछ भी कर सकता है। उसे कोई भय नहीं रह गया था।

नागरिकों का एक शिष्टमंडल शहर में सुव्यवस्था स्थापित होने के लिए डिप्टी कमिश्नर रिचर्ड के घर पहुंच जाता है। बख्शीजी रिचर्ड से कहते हैं, "सरकार की तरफ से फौरन ऐसी कार्रवाई की जानी चाहिए जिससे स्थिति काबू में आ जाये। वरना ..... वरना इस शहर पर चीलें मँडरायेंगी।"[75] रिचर्ड सिर हिलाकर कहता है, "सरकार तो बदनाम है। मैं अंग्रेज

अफसर हूँ। ब्रिटिश सरकार पर तो आपको विश्वास नहीं है, उसकी बात को तो आप कहाँ सुनेंगे।"[76] बख्शीजी रिचर्ड से कहते है कि वह शहर में जगह जगह फौज की चौकियाँ बिठाये जिससे स्थिति काबू में आये। या फिर शहर में कर्फ्यू लगा दे। परंतु रिचर्ड एक नहीं सुनता। "सरकार अपनी ओर से जो कार्रवाई कर सकती है, जरुर करेगी", रिचर्ड ने आश्वासन के स्वर में कहा, "लेकिन आप लोग शहर के नेता हैं, लोग आपकी बात ध्यान से सुनेंगे। आपको चाहिए कि आप मिलकर लोगों से अपील करें कि अमन कायम रखें।"[77] इसप्रकार रिचर्ड साफ शब्दों में इन्कार कर देता है। बख्शीजी रिचर्ड को बहुत कुछ कहते है, तो रिचर्ड हँसता हुआ कहता हैं, "वास्तव में आपका मेरे पास शिकायत लेकर आना ही गलत था। आपको तो पण्डित नेहरु या डिफेंस मिनिस्टर सरदार बलदेव सिंह के पास जाना चाहिए था। सरकार की बागडोर तो उनके हाथ में है।"[78] रिचर्ड के इस बर्ताव से साफ जाहिर होता है कि रिचर्ड इस फसाद के जड में कहीं न कहीं था और वह चाहता था कि यह विवाद बढे। वह सुझाव देता है कि एक बस में लाऊडस्पीकर लगाकर उसमें बैठकर लोगों से शांत रहने का अपील करे। तभी खबर आती है कि पूल के पार एक हिन्दू को कत्ल किया गया है। सभी सदस्य रिचर्ड के घर से बाहर पडते हैं। सभी सदस्य अलग अलग होकर चलने लगते है। कोई भी नहीं चाहता कि शहर में दंगा फसाद शुरु हो जाये। परंतु शहर की हालत बिगड चुकी थी। शहर में दंगा–फसाद, मार–काट शुरु हो गयी थी।

बारह बजे के करीब लीजा अपने कमरे में टहल रही थी। वह बेल बजाकर अपने नौकर को बुलाती है। नौकर बाबू भागता हुआ आता है। लीजा कहती है, "यू हिण्डू बाबू?"

"यस, मैडम.." बाबू ने तनिक झेपकर कहा। लीजा अपनी सूझ पर खिल उठी।, "आई गेस्ड राइट।"

"यस, मैंडम।" परंतु लीजा को हिंदू का कोई भी निशान बाबू में नहीं दिखायी देता तो वह कहती है, "यू आर नो हिन्दू, यू होल्ड ए लाई।" "नो मैडम, आई एम ए हिन्दू, ए ब्राह्मण हिन्दू।" "ओ नो, दैन वेयर इज युवर टफ्ट?" बाबू कहता है, "आई हैव नो टफ्ट मैंडम

"दैन यू आर नो हिण्डू।" लीजा बाबू को अपना कोट उतारने को कहती है। बाबू मुसकराते हुए कोट उतार देता है। शर्ट भी उतारने को कहने पर वह तीन बटन खोलता है। "शो मी युवर थ्रैड।"[79] इसप्रकार लीजा अपनी सोच द्वारा ही हिन्दू और मुसलमान को पहचानने की कोशिश करती हैं।

शहर में सब काम जैसे बँटे हुए थे : कपडे की ज्यादातर दूकानें हिन्दुओं की, जूतों की दूकाने मुसलमानों की, मोटरों–लारियों का सब काम मुसलमान करते। अनाज का काम हिन्दुओं के हाथ में था। छोटे मोटे काम हिन्दू भी करते और मुसलमान भी। शहर में शिवाले का बाजार था। वहाँ पर सभी अपने दूकान लगाते थे। नत्थू द्वारा मारे गये सुअर की चर्चा पूरे शहर में चल रही थी। नत्थू एक दुकान में बैठा था। वहाँपर भी सुअर की चर्चा चल रही थी। नत्थू शहर में इधर उधर चक्कर काट रहा था। जहाँ बैठता लोग सुअर की चर्चा करते सुनाई देते। उसे रह–रहकर यह डर सता रहा था कि कहीं उसके द्वारा मारे गये सुअर का राज खुल गया तो उसका क्या होगा। इस भय से मुक्ति पाने के लिए वह शराबखाने पहुँचा और वहाँ से सीधा रण्डियोंवाली गली में जा पहुँचा। तभी अचानक उसने देखा कि सामने से मुरादअली आ रहा है। सारे शहर में दिनभर अकेला घूमते रहने के बाद पहली बार उसे कोई पहचानवाला मिला था। नत्थू ने आगे बढकर हँसते हुए कहा "सलाम, हुजूर।" परंतु कुछ कहे बिना वह आगे बढ गया। नत्थू ने फिर से मुरादअली को पुकारा लेकिन मुरादअली रुका नहीं। मुरादअली का इसप्रकार चला जाना नत्थू को और संदेह के घेरे में डालता है। उसके अंदर का भय बाह्यरुप में परिवर्तित हो जाता हैं।

नत्थू अपने घर पहुँचता है। उसकी पत्नी उसकी राह देख रही थी। नत्थू के चुप रहनेपर वह कहती है, "तुम बोलते क्यों नहीं? तुम इतनी देर बाहर रहे, मैं मछली की तरह तडपती रही हूँ।"[80] नत्थू अपनी पत्नी से पूछता है कि क्या बाडेवाले ने उसके बारे में कुछ पूछा। उसकी पत्नी ने सबसे कहा था कि नत्थू काम पर गया है। अब नत्थू अपने आप को थोडासा भय से स्वतंत्र पाता हैं। वह पत्नी के साथ मिलकर खाना खाता है और उसके साथ

बातें करने लगता हैं। पत्नी के अलिंगनों में नत्थू खोता जा रहा था, दुनिका को भूलता जा रहा था। उसके होंठ तृप्ति के लिए पत्नी के होठों से मिलते है। कभी उसके स्तनों को पकडते है। हाँफता हुआ वह पत्नी के अंग–अंग में त्राण और सुख और विस्मृति की खोज में नत्थू भटक रहा था। तभी दूर से शोर सुनाई देता हैं। घडियाल के बजने की आवाज आती है। नत्थू का शरीर झनझना उठता है। 'अल्ला–हो–अकबर' और 'हर–हर–महादेव' की आवाजें उठने लगती हैं। नत्थू समझ जाता है कि शहर में दंगा फसाद शुरु हुआ हैं।

यह बात जब लीजा को मालूम होती है तो वह रिचर्ड से कहती है कि, "तुम्हारे रहते फिसाद हो गया है रिचर्ड?" रिचर्ड कहता है, "हम इनके धार्मिक झगडों में दखल नहीं देते। लीजा, तुम जानती तो हो।"[81] लीजा फिर कहती है, "ये लोग आपस में लडें, क्या यह अच्छी बात है?" रिचर्ड हँस दिया, "क्या यह अच्छी बात होगी कि ये लोग मिलकर मेरे खिलाफ लडें, मेरा खून करें?"[82]

शहर पूरी तरह आग की लपेट में आया था। सारे शहर में दंगा हो रहा था। लाला लक्ष्मीनारायण एक तरफ अपने बेटे रणवीर की चिंता में परेशान थे और दूसरी तरफ अपनी पत्नी और बेटी विद्या को ढाढस बँधा रहे थे। पीठ पीछे दोनों हाथ बाँधे लालाजी बडबडा रहे थे, "बडा 'बेवाका' लडका है, किसी की नहीं सुनता। समाज–सेवा, समाज–सेवा रट लगाये रहता है। जिसे अपने माँ–बाप की चिन्ता नहीं, वह समाज–सेवा क्या करेगा?"[83] लालाजी अपने बेटे को ढूँढने जाने लगते हैं लेकिन पत्नी के कहनेपर वे रुक जाते हैं। शहर में दंगे, हत्याएँ बढ रहे थे। ऐसे माहौल में भी रणवीर घर से बाहर था। लालाजी अपने नौकर ननकू को बुलाकर एक पत्र देकर उसे बाहर भेजना चाहते हैं। पत्नी कहती है, "देखो जी, इस गरीब को कहाँ भेजोने? बाहर कहर टूट रहा है। इसे कोई जानता नहीं, पहचानता नहीं।" लालाजी कहते है, "तू हर बात में टाँग क्यों अडाती है? मैं नहीं चाहता कि विद्या को लेकर हम यहाँ पडे रहें। कुछ भी हो सकता है। मैं समधी को खत लिख रहा हूँ कि अपने दोस्त शाहनवाज से कहकर हमें यहाँ से निकाल लें। जवान बेटी घर में है, मैं यहाँ नहीं रहना चाहता।"[84] ननकू नौकर

था और लालाजी की निगाह में नौकर का अस्तित्व कुछ नहीं था। बचाव के लिए ननकू को एक मसहरी का डंडा देते हुए लालाजी कहते हैं, "अगर देखो किसी गली में शोर है तो दूसरी गली में मुड जाना। हो सके तो मन्दिर में से चपरासी को साथ ले लेना। अब जाओ, देर नहीं करो। जैसे भी हो, खत पहुँचाकर आना।"[85] तभी पिछली गली में किसी के भागते कदमों की आवाज आती है। उसके पीछे किसी दूसरे व्यक्ति के कदमों की आवाज आती है। फिर सहसा अँधेरे को चीरती हुई आवाज आती है, "बचाओ .... ब...चा...ओ!" गली के पिछले हिस्से में अब दो तीनभागते व्यक्तियों के कदमों की आवाज आ रही थी। गली में किसी चीज के फेंकने की आवाज आयी। किसी ने शायद अकेले भागते आदमी के पीछे लाठी या कुल्हाडी फेंकी थी। "पकडो .... मा...रो...ए...मा...रो...ए!" फिर बचाव की पुकार करनेवाला व्यक्ति गली से भाग जाता है। शायद उसे लाठी नहीं लगी थी।

दिन के उजालें में शहर अधमरा सा पडा था। मण्डी अभी भी जल रही थी। रात के वक्त सत्रह दूकानें जलकर राख हो चुकी थी। दूकानें बन्द थी। दूध–दहीं की दूकाने कहीं–कहीं खुली थी। नया मुहल्ला के चौक में एक घोडा मरा पाया गया, शहर के बाहर गाँव जानेवाली सडक पर एक अधेड उम्र के आदमी की लाश मिली। कालिज रोड पर जूतों की एक दूकान और दर्जी की दूकान लूट ली गयी थी। एक और लाश कब्रिस्तान में मिली जो किसी हिन्दू की थी। घरों के दरवाजे बन्द थे, शहर का कारोबार, स्कूल, कालिज, दफ्तर सभी ठप्प थे।

ऐसी स्थिति में भी शाहनवाज अपनी नीली ब्यूक गाडी लेकर लालाजी और उनके परिवार को सदर बाजार में उनके किसी सम्बन्धी के घर छोडकर अपने जिगरी दोस्त रघुनाथ के घर जा रहा था। शाहनवाज को अपने बचाव की कोई चिन्ता नहीं थी। रघुनाथ के घर पहुँचकर वह कुशलक्षेम पूछता है। चाय पीने के बाद रघुनाथ की पत्नी शाहनवाज से कहती है, "मेरे और मेरी जेठनी के जेवरों का एक डिब्बा घर में पडा है, वह निकलवाना है। जब आये

थे तो थोडा–सा सामान लेकर चले आये, मैं कुछ भी साथ नहीं लायी।"[86] शाहनवाज डिब्बा लाने को तैयार होता है परंतु जाते जाते कहता है, "और जो मैं तुम्हारा जेवर हज्म कर जाऊँ तो, भाभी?" "तुमसे जेवर अच्छा है, खानजी? तुम इसे फेंक भी आओ तो मैं 'सी' नहीं करूँगी। मैं कहूँगी तुम्हारी बला से।"[87] रघुनाथ की पत्नी इतना बोलकर चाभियों का गुच्छा शाहनवाज के हाथ में देती है। अनास्था और अविश्वास के वातावरण में भी जाति व धर्म से ऊपर उठकर एक इंसानियत का ऐसा रिश्ता होता है, जिसे तोडना शाहनवाज को कठीन लगता है।

शाहनवाज जब रघुनाथ के घर पहुँचा तो मिलखी घर पर था। उसने जेवरों का डिब्बा निकालकर रघुनाथ के हाथ में दिया। दोनों सिढीयाँ उतर रहे थे। मिलखी आगे आगे उतर रहा था। अचानक शाहनवाज भभूका सा उठा। ना जाने ऐसा क्यों हुआ : मिलखी की चुटिया पर नजर जाने के कारण, मस्जिद के आँगन में लोगों की भीड को देखकर या इसी कारण कि वह जो पिछले तीन दिन से देखता–सुनता आया था वह विष की तरह उसके अन्दर घुलता रहा था। शाहनवाज ने मिलखी की पीठ में जोर से लात मारी। मिलखी लुढकता हुआ सीढियों से गिर पडा। उसक माथा फूट गया और पीठ टुट् चुकी थी। शाहनवाज का गुस्सा, जिसका कारण वह स्वयं नहीं जानता था, बराबर बढता जा रहा था। मिलखी के मुँह से गिरते समय घुटता–सा शब्द निकला था, पर अब मिलखी चुप था, या तो भय से दम तोड गया था या बेहोश पडा था या गर्दन की हड्डी टूट गयी थी। शाहनवाज उसे इसी हालत में छोडकर जेवरों का डिब्बा लेकर चला गया।

शहर में दंगे और बढ रहे थे। कम्युनिस्ट पार्टी का देवदत्त और उसके सदस्यों का मत था कि 'शहर में दंगों को रोकने के लिए एक बार फिर कांग्रेस और मुस्लिम लीग के लीडरों को इकठ्ठा करना होगा। हयातबख्श और बख्शी को आपस में मिलाना होगा।' इस कार्य के लिए देवदत्त घर से निकल ही रहा था कि, "फिर कहीं जा रहे हो?" खाट पर बैठा अधेड उम्र का स्थूलकाय बाप बोला, "मरना चाहते हो तो पहले अपने घरवालों को मारकर

जाओ।. देखते नहीं शहर की क्या हालत हो रही है?"[88] देवदत्त अपने घरवालों की बात नहीं मानता और निकल पड़ता है। वह चौक में पहुँचता है तो एक आदमी उसे कहता है कि आगे मत जाओ लाश पडी है। वहाँपर एक मुसलमान की लाश पडी थी। आगे कब्रिस्तान में एक हिन्दू मरा पडा था। लेकिन देवदत्त के लिए यह समय न वह लाश ठिकाने लगाने का था न हिन्दू लाश के दर्शन लेने का। यह वक्त पार्टी आफिस में पहुँचने का था।

पार्टी आफिस पहुँचता है तो उसे पता चलता है एक मुसलमान कामरेड पार्टी छोडकर जा रहा था। देवदत्त कामरेड को कहता है, "जल्दबाजी में कोई काम नहीं करो साथी, हम मध्यवर्ग के लोग हैं, पुराने संस्कारों का हम पर गहरा प्रभाव है। मजदूर वर्ग के होते तो हिन्दू–मुसलमान का सवाल तुम्हें परेशान नहीं करता।" पर साथी ने बुचका उठाया और कम्यून छोडकर निकल गया।"[89] मीटिंग शुरु हुअी। अनेक बातोंपर विचार हुआ। लेकिन अंतिम बात जब सामने आयी 'सभी पार्टियों के नुमाइन्दों की मीटिंग बुलाना' तो सभी के मुँह फिर गये। क्योंकि ऐसी मीटिंग नहीं हो सकती थी, क्योंकि कांग्रेस दफ्तर पर टाला लगा था, मुस्लिम लीगवालों से बात करो तो पाकिस्तान के नारे लगाते है। कुछेक पहलुओं पर विचार होने के बाद फैसला हुआ की मीटिंग हयातबख्श के घर बुलायी जाये।

सचमुच उस दोपहर को हयातबख्श के घर मीटिंग भी हुई। मीटिंग में तू–तू मैं–मैं भी हुई, हयातबख्श इस बात पर अडा रहा कि बख्शी कबूल करें कि वह हिन्दुओं की नुमाइन्दगी करने आये हैं, कि कांग्रेस हिन्दुओं की जमात है। शहर में शांति स्थापित करने के लिए देवदत्त अमन की अपील पढकर सुनाता है। बख्शीजी अमन कायम करने की सहमति पत्र पर दस्तखत करते हैं परंतु हयातबख्श ' पाकिस्तान जिन्दाबाद' के नारे लगाते ही दस्तखत करता है। तभी खबर आ पहुँचती है कि जरनैल मारा गया।

उस दिन जरनैल नारा दे रहा था कि, "साहिबान, मैं आपसे कहता हूँ कि हिन्दू–मुसलमान भाई–भाई हैं, शहर में फिसाद हो रहे हैं, आगजनी हो रही है और उसे कोई रोकता नहीं। डिप्टी कमिश्नर अपनी मेम को बाँहों में लेकर बैठा है और मैं कहता हूँ कि

हमारा दुश्मन अंग्रेज है। गांधीजी कहते हैं कि वही हमें लडाता है और हम भाई–भाई हैं। हमें अंग्रेजों की बातों में नहीं आना चाहिए। और गांधीजी का फर्मान है कि पाकिस्तान मेरी लाश पर बनेगा। मैं भी कहता हूँ पाकिस्तान मेरी लाश पर बनेगा, हम एक हैं, हम भाई–भाई हैं, हम मिलकर रहेंगे....।"[90] जरनैल का यह नारा पूरा होने से पहले ही आसपास खडे लोगों में से एक ने लाठी के एक ही वार में जरनैल की खोपडी फोड दी। जरनैल जहाँ खडा था वहीं ढेर हो गया था।

मोहल्लो–मोहल्लो में दलबंदी हो गई है। एक धर्मवाला दूसरे धर्मवाले को बेमौत मार रहा है। रणवीर भी अपने दल के सदस्यों को निर्देशन दे रहा है। तेल उबालने के लिए लकडियाँ कम पड गयी है। तो रणवीर अपने साथियों से कहता है, "अपने घर से उठा लाओ। जो भी मिले, लकडी या कोयला और जितना भी मिले, उठा लाओ। इसमें बिलम्ब नहीं होना चाहिए।" 'शस्त्रागार' एक दो मंजिले घर की ऊपर वाली मंजिल में बनाया गया। ऊपर वाली मंजिल का छज्जा सडक पर खुलता था और एक पीपल के पेड के पीछे छज्जा ढका रहता था। रणवीर और उसके बाकी साथी उत्तेजित थे। अभी तक केवल तैयारी चलती रही थी, आज रणभूमि में जौहर दिखाने का समय आ गया था। सभी मिलकर क्या करना है सोच रहे थे तभी एक इत्रफरोश गली में आता है। रणवीर इन्द्र को उसे मारने का काम सौंपता है। इन्द्र घर से बाहर गली में आकर इत्रफरोश के साथ बातें किये जा रहा था। उसने कमानीदार चाकू की मूठ को मजबूती से पकड रखा था। नल पार करते ही इन्द्र इत्रवाले के पेट में नश्तर घुसेड देता है। "ओ लोको, मार डाला। मुझे मार डाला। ओ लोको!..." इत्रफरोश त्रास और भय से मर रहा था। उसके लिए अपने थैलों का बोझ उठा पाना असम्भव हो रहा था और उनके बोझ के नीचे ही वह मुँह में बल धडाम से गिरा।

शहर में जो कुछ हो रहा था वह सब देख–सुनकर नत्थू खुद को इस सबके लिए बडा दोषी मानता है। जितना अधिक वह मार–काट की अफवाहों को सुनता, उतना अधिक परेशान होता। नत्थू बार–बार अपने मन को समझाता है कि मैं अन्तर्यामी तो नहीं हूँ, मुझे क्या

मालूम किस काम के लिए मुझसे सुअर मरवाया जा रहा है। कुछ देर के लिए उसका मन ठिकाने भी आता, लेकिन फिर किसी घटना की बात सुनता तो बेचैन होने लगता। वह अपने मन की बात किसी को बताना चाहता है। बार–बार वह सभी चमारों के बीच जाकर खडा होता, बतियाने की कोशिश करता, लेकिन वह कह नहीं पता। 'क्या मैं अपनी पत्नी से सारी बात कह दूँ? वह समझदार औरत है, मेरी बात समझ जायेगी, मेरा दिल हल्का होगा।"[91] नत्थू सोचता है कि यह जरुरी नहीं है कि वह वही सुअर हो। उसके दिल में बोझ बढता जाता है। आखिर नत्थू अपनी पत्नी के पास बैठता है। फिर सहसा वह अपने–आप ही बोलने लगा, "तुझे मालूम है मण्डी में आग क्यों लगी है?" "मालूम है, मसीत के सामने किसी ने सुअर मारकर फेंका था। इस पर मुसलमानों ने मण्डी को आग लगा दी।" "वह सुअर मैंने मारा था।"[92] नत्थू की पत्नी के चेहरे पर से सारा खून उतर गया ओर वह नत्थू की ओर फटी आँखों से देखती रह गयी। नत्थू धीरे–धीरे सारा किस्सा अपनी पत्नी को बताता है। उसकी पत्नी कहती है, "तूने बहुत बुरा काम किया है, पर इसमें तेरा क्या दोष? तुझसे लोगों ने धोखे से काम करवाया है। तूने धोखे में आकर यह काम किया है।"[93] नत्थू के दिल का बोझ बहुत कम होता है। वह अपने आप को सुखी तथा निर्दोष महसूस करता है। वह भावेद्वेलित होकर पत्नी से कहता है, "जब तू मेरे पास होती है तो मुझे लगता है मेरे पास सबकुछ है।" सहसा उसकी पत्नी उसके हाथ में चाय का गिलास देकर कहती है कि वह बाहर जाकर डेरेवालों से मिले और वह स्वयं झाडू लेकर कोठरी बुहारने लगती है।

<u>द्वितीय खण्ड</u> :–

उपन्यास के द्वितीय खण्ड में सांप्रदायिकता शहर से गाँवों में प्रवेश करती है। जब आस्था और विश्वास का संकट पैदा होता है उस वक्त आदमी कहीं अंदर तक हिल जाता है और व्यवस्था की सारी कडियाँ टूटकर बिखर जाती है।

वर्षों से जिस गाँव में हरनामसिंह अपनी पत्नी बंतो के साथ होटल का धंधा करता चला आ रहा था। उस गाँव का कोई आदमी नहीं था जो आता–जाता हरनामसिंह की दूकान पर न बैठता होगा। इस सारे गाँव में ये दोनों ही सिक्ख परिवार के थे, बाकी पूरा गाँव मुसलमानों का था। माहौल बिगडते देख बंतो हरनामसिंह को सचेत करती है कि इस गाँव से निकलकर खानपूर में सगे–सम्बन्धियों के पास चले। लेकिन हरनामसिंह मानता नहीं। चलती दूकान छोडकर कैसे भाग जाये? वह हाथ जोडकर कहता "जिसके सिर उपरि तूँ सुआमी सो दु:खु कैसा पावै।" (हे मालिक, जिसके सिर पर तेरा हाथ है वह दु:ख क्यों कर पायेगा।)[94] बंतो सुनकर चुप होती। फिर अन्दर ही अन्दर उसका दिल डूबने लगता तो कहती : नजदीकवाले गाँव में मेरी बहन के घर चलों, वहाँ पर गुरुद्वारे में पडे रहेंगे, वहाँ सिख संगत बडी है। अपने लोगों का आसरा होता है। लेकिन हरनामसिंह बंतो की एक भी बात नहीं सुनता। उसे विश्वास है कि लोगों के साथ भले ही बुरा–भला हो जाये, इसके साथ नहीं हो सकता। वह बंतो को समझाता है कि हमने किसी का कभी बुरा नहीं चेता है, ये लोग भी हमारे साथ कभी बुरी तरह पेश नहीं आये। सारे गाँव में हमारा एक ही सिख घर है। इन्हें गैरत नहीं आयेगी कि हम निहत्थे बूढों पर हाथ उठायेंगे?

दोपहर ढलने आयी तो ढक्की पर से करीमखान लाठी टेकता आ रहा था। करीमखान दूकान के सामने आता है पर रुकता नहीं। केवल चाल धीमी करके खाँखारने के बहाने धीरे से कहता है – "हालत अच्छी नहीं हरनामसिंह, तू चला जा।" दो कदम जाकर फिर बोला, "गाँववाले तो तेरे वल अक्खवी नहीं चुक्कणगे पर बाहरों लोकाँ दे आण दा डर है। उन्हाँ नूँ रोकणा साँडे बस दा नहीं।"[95] करीमखानद्वारा इसप्रकार बिना रुके चेतावनी दे जाना हरनामसिंह को समझ नहीं आया। लेकिन हरनामसिंह इतना जरुर समझ गया कि यहाँ रुकना खतरे से खाली नहीं है, अब यहाँ से निकलना ही पडेगा। हरनामसिंह अपनी दोनाली बंन्दुक साथ लेता है। बन्तों के गहने दूकान के पीछे गाड देता है। ढोल बजने की आवाज आने लगी, दूर से 'अल्ला हो अकबर' के नारे उठने लगे। बन्तों और हरनामसिंह अपने तीन कपडों में, थोडी–बहुत पूँजी और बन्दूक लेकर दूकान को ताला लगाकर बाहर निकल आये। घर से बाहर कदम

रखते ही उनके लिए अपना ही इलाका पराया बन गया। सडक के पार एक नाला था उसी नाले की ओर दोनों चले जाते है। दोनों छिपकर चल रहे थे कि किसी चीज पर जोर जोर से प्रहार करने की आवाज आने लगी। हरनामसिंह समझ गया कि बलवाई उसकी दूकान का दरवाजा तोड रहे है। दोनों के पैर काँप रहे थे, लेकिन एक दूसरे का हाथ पकडे दोनों आगे सरक रहे थे। हमलावर उनके दूकान को आग लगाते है। हरनामसिंह शिथिल आवाज में कहता है, "सब खाक हो गया।" कुछ ही देर में दोनों थककर चूर हो गये। जब पौ फटने का समय हुआ तो वे एक छोटे से झरने के किनारे पत्थरों पर बैठे थे। वे ढोक मुरीदपुर नामक छोटे गाँव के निकट पहुँचे थे। हरनामसिंह सोचता है इसी गाँव में किसी के घर में रुकते हैं। बन्तो कहती है, "तुम इस ढोक में जानते किसी कोनहीं हो।" हरनामसिंह मुसकरा दिया, "जहाँ सबको जानता था, वहाँ किसी ने आसरा नहीं दिया, सामान लूट लिया और घर को आग लगा दी। यहाँ जाननेवालों से क्या उम्मीद हो सकती है? उन लोगों के साथ तो मैं खेल बडा हुआ था....।"[96] दोनों उठकर गाँव की ओर जाने लगे। "बन्तों, अगर वे लोग मारने पर उतारु हुए तो मैं पहले तुझे खत्म कर दूँगा, फिर अपने को खत्म कर दूँगा। जीते-जी मैं तुझे दूसरों के हाथ में पडने नहीं दूँगा।"[97] दोनो गाँव के बाहर ही, पहले घर के सामने रुक गये। न जाने किसका घर था, कौन लोग दरवाजे के पीछे रहते थे। दरवाजा खुलेगा तो किस्मत जाने क्या गुल खिलायेगी। हरनामसिंह ने हाथ ऊपर उठाकर दरवाजे पर दस्तक दी।

गुरुद्वारा खचाखच भरा था। पूरे गाँव के सिक्ख गुरुद्वारे में इकठ्ठे हो गए थे। सुरक्षा व्यवस्थापर विस्तृत चर्चा हो रही थी। जत्थेदार किशन सिंह, निहंग सिंह, बिशन सिंह, मनिहारेवाले एवं तेजसिंह सुरक्षा व्यवस्था के अलग अलग मोर्चे पर डटे हुए थे। गुरुद्वारे से नारा उठता है, "जो बोले सो निहाल, सत बोले, सिरी, अकाल।" तभी मुसलमानों के डेरे से भी नारा आता है, "नारा-ए-तकबीर।" "अल्ला-हो अकबर।" स्थिति को और अधिक बिगडते देखकर सिक्खों के बीच सोहनसिंह और मुसलमानों के बीच मीरदाद अपनी अपनी बिरादरी को समझाते हैं कि यह अंग्रेजों की चाल है, हम हिन्दू-मुस्लिमों को मिलजुलकर रहना चाहिए।

अन्यथा बर्बादी के अलावा कुछ हाथ आनेवाला नहीं है। लेकिन धर्मांधता की श्रध्दा में डूबे लोग इस प्रस्ताव को हटाते है। गाँव पर साये उतर आये थे। नारों की गूँज और अधिक तेज होने लगी थी। गुरुद्वारे में भी उत्तेजना पराकाष्ठा तक जा पहुँची थी।

हरनामसिंह ने दूसरी बार साँकल खटखटायी तो अन्दर से एक स्त्री की आवाज आयी, "घर पर नहीं है, मर्द बाहर गये हैं।" बन्तो दरवाजा खटाखटाते बोलती है, "करमावालिया दरवाजा खोलो, असी मुसीबत दे मारे आये हाँ।" एक बडी उम्रवाली औरत दरवाजा खोलती है। वह दोनों को अन्दर लेती है। घर में सांस राजो और बहु अकराँ ही घर पर थी। हरनामसिंह उनको सब कुछ बता देता है। राजो हरनामसिंह को लस्सी देती है तो वह रो पडता है और कहता है, "भला हो तुम्हारा बहन, तुम्हारा किया हम कभी नहीं उतार सकेंगे।" "रब्ब घरों बेघर किसी आँ न करे। रब्ब दी मेहर होई ताँ सब ठीक हो जायेग।" (भगवान किसी को घर से बेघर ना करे। अल्लाह की कृपा बनी रही तो सब ठीक हो जायेग।)[98] वह घर आखिर मुस्लमानों का था। कुछ देर बाद मालकिन बोली, "मेरा घरवाला और बेटा दोनों गाँववालों के साथ बाहर गये हुए हैं । वे अभी लौटते होंगे। मेरा घरवाला तो अल्लाह से डरनेवाला आदमी हैं, तुम्हें कुछ नहीं करेगा, पर मेरा बेटा लीगी और उसके साथ और लोग भी है। तुमसे वे कैसा सलूक करेंगे, मैं नहीं जानती। तुम अपना नफा–नुकसान सोच लो।"[99] यह सुनकर हरनामसिंह घर से निकलने लगता है तो फिर वही औरत उसे रोकती है और अपने ही घर में न चाहते हुए भी ऊपर अटारी में दोनों को बैठा देती है। सुरक्षा के लिए वह हरनामसिंह से बंदुक भी लेती है। कुछ ही देर बाद अकराँ का ससुर आ जाता है। वह एक बडा काला ट्रंक लेकर आये है। हरनामसिंह ऊपर बैठे बैठे ही पहचानता है कि वह उसका ही ट्रंक है जो ये लूटकर लाये है। ट्रंक पर अभी ताला लगा हुआ था। ट्रंक खोलने के लिए ताले पर ठकाठक शुरु होती है। तभी ऊपर से हरनामसिंह कहता है, "ताला क्यों तोडती हो बेटी, यह लो चाभी, यह हमारा ही ट्रंक है।" फिर एहसानअली की तरफ मुखातिब होकर बोला, "एहसानअली, मैं हरनामसिंह हूँ, तुम्हारी घरवाली ने हमें यहाँ पनाह दी है। गुरु महाराज तुम्हें सलामत रखें। यह ट्रंक हमारा है, पर अब उसे तुम अपना ही समझो। अच्छा हुआ जो यह

तुम्हारे हाथ लगा, किसी दूसरे के हाथ नहीं लगा।"[100] उनको देखकर एहसानअली को समझ नहीं आता कि हरनामसिंह के प्रति कैसा व्यव्हार करे। तनिक दिलेरी के साथ बोला, "खैर मनाओ, जो तुमने मेरे घर में पनाह ली। और किसी के घर जाते तो इस वक्त जान से भी हाथ धो चुके होते। मैं तो तुमसे कुछ नहीं कहूँगा, हरनामसिंह, तुम मेरे घर आये हो, पर अब तुम यहाँ से चले जाओ। मेरे बेटे को पता चल गया कि तुम यहाँ पर हो तो वह तुम्हारे साथ अच्छा सुलूक नहीं करेगा। गाँववालों को भी पता चले कि हमनें तुम्हे पनाह दी है तो हमारे लिए बहुत बुरा होगा।"[101] हरनामसिंह और बन्तो दोनों जाने के लिए निकलते है । तो एहसानअली दोनों को भूसे की कोठरी में बैठाने के लिए कहता है। दोनों अब एक अँधेरे दालान में पहुँचे। दोनों का हौसला होने लगा कि यहाँ शाम तक पनाह मिली रहेगी। थोडी देर तक बातें करने के बाद दोनों को झपकी आ गयी। उनकी नींद टूटी तो दरवाजे पर कुल्हाडे पड रहे थे। दोनों सिर से पाँव तक कँाप उठे। रमजान घर आया था और अकराँ ने उसे दोनों के बारे में बताया था। रमजान ने दरवाजा तोड दिया और बोला, "निकलो बाहर काफिरो ...। हरनामसिंह बोला "मार डाल...।" रमजान ने हरनामसिंह को पहचाना था। एक दो बार उसने दूकार पर चाय पी थी। रमजान ने कुल्हाडी उठाने की कोशशि की, लेकिन कुल्हाडी हाथ में रहते भी उसे उठा नहीं पाया। रमजान हरनामसिंह के सामने हाँफता खडा रह गया। फिर गालियाँ बकता हुआ बाहर चला गया।

लगभग आधी रात का समय था। राजो दोनों को छोडने के लिए पेडों के झुरमुट तक उनके साथ आयी। वहाँ से हरनामसिंह और बन्तों नदी के पार उतर रहे थे। उस वक्त राजो ने अपने हाथ में पकडी बन्दूक हरनामसिंह के हाथ में दे दी। "जाओ हुण, रब्ब राखा। सीधे किनारे –किनारे चले जाओ। आगे जो तुम्हारी किस्मत।" राजो अपने कुर्ते की जेब से एक छोटी पोटली निकालकर हरनामसिंह को देती है। "एह तुसाँडे सन्दूक विचों मिले हन। मैं कड़ढ लियायी हाँ। तुसाँडे ऊपर ओखा वेला आया है, जेवर कोल होये ताँ सहारा होवेगा।"[102] (तुम्हारे ट्रंक से मिल ये दो जेवर मैं निकाल लायी हूँ। तुम्हारे आगे कठिन समय है, पास में

दो गहने हुए तो सहारा होगा।) दोनों पति–पत्नी ढलान उतरने लगे। राजो अभी भी टीलेपर खडी थी और अज्ञात की ओर बढते उनके कदमों को जैसे देख रही थी।

इसी बीच देहात की ऊबड–खाबड जमीन पर एक और नाटक खेला जा रहा था। रमजान और उसके साथी ढोक इलाहीबख्श और मुरादपुर से लूट–पाट का सामान लेकर हँसते हँसते लौट रहे थे तभी उन्होंने दूर एक टीले के पास एक भागता सिख नजर आ गया। हरनामसिंह का बेटा इकबालसिंह उनकी नजर से दूर भागने तथा छिपने की कोशिश कर रहा था। वह एक खोह में छिपता है। सभी लोग उसे ढूँढ रहे थे कि एक बोला, "वह जा रहा है, उधर को गया है।" सभी लोग खोह में ढेले मारने लगे। थोडी देर बाद एक आदमी बोला, "ओ सरदार, दीन कबूल कर ले, हम तुम्हें छोड देंगे।" अन्दर से आवाज नहीं आयी। फिर एक आदमी कहता है, "बोल सरदार, इसलाम कबूल करेगा या नहीं? अगर मंजूर है तो अपने–आप बाहर आजा, हम तुम्हें कुछ नहीं करेंगे। वरना ढेले मार–मारकर मार डालेंगे।"[103] पत्थर अभी पड रहे थे। तभी खोह के अन्दर से हाथों और पैरों के बल चलता हुआ सरदार खोह के मुँह पर आ गया। "बोल, कलमा पढेगा या नहीं?" रमजान ने कहा। सरदारने ऊपर–नीचे सिर हिला दिया। वह जानता था कि ना करने का असर क्या होगा। "मुँह से बोल मादर ...। बोल, नहीं तो देख यह पत्थर अभी तेरी खोपडी पर पडेगा।" इकबालसिंह सिसकियों के बीच कहा "कलमा पढूँगा।" तभी गगनभेदी आवाज उठी "अल्लाह–ओ–अकबर!" रमजान ने आगे बढकर उसे गले लगाया। फिर बारी बारी से सभी ने उसे गले लगाया। सभी मिलकर उसे अपने गाँव ले आये। इकबालसिंह के बाल कैंटे जा रहे थे तभी नूरदनी वहाँपर आकर इकबालसिंह के पास आकर बैठता है। बायें हाथ से इकबालसिंह का मुँह खोला और दायें हाथ में पकडा मांस का बडा टुकडा, जिसमें से टप–टप खून की बुँदे चू रही थी, इकबालसिंह के मुँह में डाल दिया। "खोल मुँह, तेरी माँ की.... खोल मुँह। ... अब चूस जा इसे मादर....।"[104] तभी मुल्ला और गाँव का एक बुजुर्ग आकर इकबालसिंह से कलमा पडवाया जाता है "ला इलाह इल्लिल्ला, मुहम्मद रसूल अल्ला।" शाम ढलते ढलते इकबालसिंह के शरीर पर से सिख्खी की सब अलामतें दूर कर दी गयी थी और मुसलमानी की सभी

अलामतें उतर आयी थी। अब वह काफिर नहीं था, मुसलमान था। मुसलमानों के सभी दरवाजे उसके लिए खुल गए थे।

तुर्क आये थे पर अपने ही पडोसवाले गाँव से आये थे। दो दिन और दो रात तक घमासान युध्द हुआ। लडनेवालों के पाँव बींसवीं सदी में थे, सिर मध्ययुग में। गाँव में हिन्दु–सिक्ख से ज्यादा मुसलमान थे। फिर भी सिक्ख युध्द की कमान सँभाले हुए थे। सिक्ख–मुसलमानों में युध्द हुआ। अनेक सरदार मारे गए। निहंगसिंह और सोहनसिंह भी मारे गये। अब गुरुद्वारे में असला लगभग चुक गया था। मुखबरों की खबर थी कि मुसलमानों को बाहर से कुमुक पहुँचनेवाली है, जब कि सिक्खों का सम्पर्क बाहर से कट गया था। गुरुद्वारे के अन्दर, दरवाजे के पास युध्द–परिषद के सदस्य तेजसिंह के साथ समझौते की शर्तों पर विचार कर रहे थे।

शेख गुलाम रसूल के घर मुसलमानों का डेरा था। जहाँ गुरुद्वारे की स्थिति एक घिरे हुए स्थान जैसी थी वहाँ शेखों का मकान खुली जगह पर था। चबूतरे पर बैठे मुजाहिद अपने अपने किस्से सुना रहे थे। उनके किस्से तो पशुता की पराकाष्ठा थी। एक मुसलमान सुना रहा था, "हम जब गली में घुसे तो कराडा भागने लगा, कोई इधर जाये, कोई उधर जाये। हिन्दुओं की एक लडकी अपने घर की छत पर पहुँच गयी। हमने देख लिया जी। सीधे दस बारह आदमी उसके पीछे छत पर पहुँच गये। वह छत की मुँडेर लाँघकर दूसरे घर की छत पर जा रही थी जब हमने उसे पकड लिया। नबी, लालू, मीरा, मुर्तजा, बारी–बारी से सभी ने उसे दबोचा।" "ईमान से?" एक ने संशय से पूछा। "कसम अल्लाह पाक की। जब मेरी बारी आयी तो नीचे से न हूँ, न हाँ, वह हिले ही नहीं, मैंने देखा तो लडकी मरी हुई।" और वह खोखली हँसी हँसकर बोला, "मैं लाश से ही जना किये जा रहा था।"[105] एक और मुजाहिद सुनाता है कि उसने किस प्रकार एक औरत को खंजर मारकर खत्म किया।

इधर गुरुद्वारे में निहंगसिंह ने आवाज दी, "पश्चिम से बलवाई आ रहे है। दुश्मनों को कुमुक मिल गयी है।" ढोल पीटते और बढते आ रहे बलवाइयों की आवाजें और नजदीक आ रही थी। "अल्लाह–हो'अकबर" का नारा बुलंद हो रहा था। गुरुद्वारे से भी हवा को चिरता हुआ नारा उठा, "जो बोले सो निहाल! सत सीरी अकाल!" गुरुद्वारे में स्त्रियों और बच्चों का जमघट था। बढते चीत्कार में सभी औरत स्वयं सिमटकर एक जगह आ गयी थी। मुसलमानों का आक्रमण होने पर अनेक स्त्रियाँ गुरुद्वारे से बाहर निकल आयी और सीधी एक कुएँ तक चली गयी। सबसे पहले जसबीर कौर कुएँ में कूद गयी। उसके बाद सिक्ख स्त्रियाँ झुंड से अपने बच्चों के साथ कुएँ में कुद गयी। देखते ही देखते गाँव की दसियों औरते अपने बच्चों को लेकर कुएँ मे कुद गयी थी। तुर्क जब लाशों को रौंदते हुए गुरुद्वारे की ओर बढे तो गुरुद्वारे में एक भी स्त्री नहीं थी। कुएँ के अन्दर से चिल्लाने–चीखने की आवाजें, बच्चों के बिकडाट सुनायी देते रहे। गाँव में जगह जगह से "अल्लाह–हो–अकबर" और "सत सिरी अकाल" के नारे गूँज रहे थे।

न जाने रात के किस पहर लूट–पाट बन्द हो गयी थी। जब रोशनी फैलने लगी तो चीलें और कव्वे, ढेरों के आसपास में उडने लगे। गिध्द भी मँडराते हुए आ गये। कुछ गिध्द कुएँ के पास बैठे थे जहाँ लाशें फूलने लगी थीं और फूल–फूलकर कुएँ के मुँह तक पहुँची थी। गलियाँ सुनसान पडी थी। जगह–जगह लडाई के निशान नजर आते थे। तभी अंग्रेजों का एक हवाई जहाज गाँव के ऊपर घरघराते हुए आता है। किशनसिंह ने भावोद्रेक में जोर जोर से हाथ हिलाते चिल्लाकर कहा, "गॉड सेव दि कंग, साहिब, गॉड सेव दि किंग।" थोडी देर बाद वह कहता है, "दो दिन पहले आ जाते साहब, तो हमारा इतना ज्यादा नुकसान तो नहीं होता, मगर कोई फिक्र नहीं...।"[106] हवाई जहाज तीन चक्कर लगाकर अन्य गाँवों की ओर बढ गया।

यहाँ शहर में भी माहौल बदल गया था। रिचर्ड अपनी जीप लेकर दौरे पर निकला था। हेल्थ ऑफिसर के घर वह जाता है और लाशों को ठिकाने लगाने तथा बीमारीयाँ न फैले

आदि बातों पर चर्चा करता है। उसके बाद वह रिलीफ कमेटी के कार्याकर्ताओं को मिलता है। वहाँ पर रिचर्ड ने सीधी लाइन पकडी, शहर की स्थिति पर बहस होने ही नहीं दी, अपने सुझाव दिये और बैठ गया। लक्ष्मीनारायण द्वारा यकीन दिलाए जाने पर कि सभी लोग, संस्थाएँ, सरकार की सहायता करेंगी, रिचर्ड ने कमेटी कार्यकर्ताओं से विदा ली और निकल गया। रिचर्ड के जाने के बाद बख्शीजी कहते है, "फिसाद करनेवाला भी अंग्रेज, फिसाद रोकनेवाला भी अंग्रेज भूखों मारनेवाला भी अंग्रेज, घरों में बसानेवाला भी अंग्रेज...."[107]

जिस बीच रिचर्ड शहर का दौरा कर रहा था, उसी बीच लीजा बोरियत से परेशान थी। रिचर्ड शाम के आठ बजे घर पहुँचा तो लीजा नशे में सोफे पर पडी थी। उसे उठाकर रिचर्ड कमरे में ले जाता है। लीजा को वह बताता है कि दंगों में कितना नुकसान हुआ है और गाँव तथा शहर की हालत क्या है। वह कहता है, "तुम सोओ, लीजा, अभी मुझे बहुत काम करना है।" "इतने गाँव तो जल गये रिचर्ड, अभी भी तुम्हें काम है? अब तुम्हें और क्या काम करना है?"[108] रिचर्ड ठिठक गया। क्या लीजा व्यंग्य कर रही है? क्या उसके दिल में मेरे प्रति घृणा पैदा होने लगी है, जो इस तरह बातें करने लगी हैं? लीजा रिचर्ड से कहती है, "मुझे कहाँ घुमाने ले चलोगे, रिचर्ड? मुझे जलते गाँवों की सैर कराओगे? मैं कुछ भी देखना नहीं चाहती, कही भी जाना नहीं चाहती।" रिचर्ड उत्साह का स्वाँग बराबर बनाये रखते हुए कहता है कि, "हम सैयदपूर में जायेंगे। वहाँ फलों के बाग के पास लार्क पक्षी की आवाज सुनायी देती है। और भी तरह तरह के पक्षी मिलते है, जिन्हें तुमने पहले कभी नहीं देखा।" "क्या यह वही जगह है जहाँ औरते डूब मरी हैं?" "हाँ वही, कुएँ के साथ नदी बहती है और नदी के पार ही फलों का बाग है...।" सहसा लीजा रिचर्ड के चेहरे की ओर देखती रही, "तुम कैसे जीव हो रिचर्ड, ऐसे स्थानों पर भी तुम नये–नये पक्षी देख सकते हो, लार्क पक्षी की आवाज सुन सकते हो?"[109] इस बात पर रिचर्ड उत्तर देता है, "यह मेरा देश नहीं है। न ही ये मेरे देश के लोग हैं।"[110] रिचर्ड लीजा को दूसरे दिन देहात जाने के लिए तैयार रहने के लिए कहकर चला जाता हैं।

रिलीफ कमेटी के कार्यकर्ताओं ने आँकडे इकठ्ठा करने का काम शुरु किया हैं। कितने मरे, कितने घायल हुए, कितना माली नुकसान हुआ। आदि के बारे में आँकडे इकठ्ठे किये जा रहे थे। सभी गाँवों के आँकडे इकठ्ठे करने के लिए लोगों को पुछा जाता तो वह अपनी सारी रामकहानी सुनाने लगता। हरनामसिंह अपने बेटे इकबाल सिंह के लिए परेशान था प्रकाशों को अल्लाहरक्खा ने जबरदस्ती ब्याह लिहा था। किसी का बेटा लापता था, किसी की बेटी। परंतु कार्यकर्ताओं के द्वारा जो निकाला गया था उससे इस बात का पता चलता था कि जान–माल का नुकसान हिंदू और मुसलमानों का लगभग बराबर हुआ था। हिंदू मुसलमान दोनों अंग्रेजो की चाल को समझ गए थे। कांग्रेस और मुस्लिम लीग अब अमन कायम करने के लिए करीब आ गये थे। इतना सब कुछ होने पर भी जो हिंदू मुस्लिम इलाके में रहते थे तथा जो मुस्लिम हिंदूओं के इलाके में रहते थे वे अपनी सारी संपत्ती बेचकर अपने अपने लोगों के बीच जा रहे थे। हजार-हजार की संपत्ति पाँच सौ में बेची जा रही थी।

शहर में अमन कायम करने के लिए अमन कमेटी की मीटिंग के लिए लोग हॉल में इकठ्ठा हो गये थे। हॉल में अनेक बातों पर चर्चा हो रही थी। तभी लूकस साहब कहने लगे, "मैं सोचता हूँ, इस वक्त हम सब मिलकर, जैसे भी हो, शहर की फिजा को बेहतर बनायें। यहाँ शहर के सभी बड़े लोग मौजूद हैं, उनके आवाज का बडा असर होगा। मेरा विचार है कि एक अमन कमेटी बनायी जाये ओर यह अमन कमेटी हर मुहल्ले में, हर गली में अमन का प्रचार करे। इसमें सभी सियासी जमातों के नुमाइन्दे शामिल हों। इस काम के लिए, मैं समझता हूँ कि अगर एक बस का इन्तजाम हो सके, जिस पर लाउडस्पीकर और माइक्रोफोन लगा दिये जायें, और कांग्रेस, मुस्लिम लीग तथा अन्य सियासी जमातों के नुमाइन्दे बैठकर जगह–जगह बस में से अमन की अपील करें तो इसक बडा असर होगा।"[111] तालियों की गडगडाट से इस प्रस्ताव का स्वागत किया गया। शाहनवाज बस का इन्तजाम करने को तैयार होता है। तभी देवदत्त कहता है, "हमें इत्तला मिली हैं कि बस का इन्तजाम सरकार की तरफ से किया जा रहा है।" तब शाहनवाज कहता है, "पेट्रोल का सारा खर्चा मैं दूँगा।" इस पर एक सज्जन कहते है,

"साहिबान, प्रोग्राम तय करने से पहले क्या यह बेहतर नहीं होगा कि हम बाकायदा अमन कमेटी कायम कर ले, उसके ओहदेदार चुन लें और बाजाब्ता तौर पर काम करें?"[112] लेकिन इस बात पर सदस्यों में फिर झगडा होता है कि कमेटी के सदस्य कौन बनेंगे और किस धर्म के कितने सदस्य होंगे? अंत में सभी के विचार विमर्श के बाद सौंत मुस्लिम, पाँच हिंदू और तीन सिक्ख सदस्यों की अमन कमेटी कायम की जाती हैं। देर तक बहस हुई, बहस के दौरान लोग थकने लगे थे, पर आखिर में यह फार्मूला मंजूर हो गया और इसमें लाला लक्ष्मीनारायण भी शामिल हो गये, लाला मंगलसैन भी, शाहनवाज भी और कितने ही और लोग।

मामला अभी तय नहीं हुआ था कि भोपू बजने की आवाज आती है। देवदत्त कहता है, "साहिबान, अमन की बस आ गयी है। हम अपने पहले दौरे पर यहीं से रवाना होंगे। मैं गुजारिश करूँगा कि इसमें प्रसिडेण्ट और वाइस प्रेसिडेण्ट साहिबान और उनके अलावा जितने साथी और चल सकते हैं, सभी चलें। बस में लाउडस्पीकर लगा दिया गया है। बस जगह-जगह रुकती जायेगी और बारी बारी से हमारे मोहतरिम बुजुर्ग, लोगों को शहर में अमन कायम रखने की ताकीद करते जायेंगे।"[113] गुलाबी और सफेद धारियोंवाली बस आ जाती है। आगे पिछे लाउडस्पीकर का एक का भोंपू लगा हैं। लोगों के बाहर आनेपर बस में से नारे गुँफने लगे –

"हिन्दू – मुस्लिम – एक हो।"

"हिन्दू – मुस्लिम इत्तहाद – जिन्दाबाद।"

"अमन कमेटी – जिन्दाबाद"

लोग बस के अंदर झाँककर देखने लगे। कौन आदमी था जो पहले से बस में बैठकर आया था। कौन था वह आदमी? ड्राइवर की सीट के साथवाली सीट पर माइक्रोफोन पकड़कर बैठा था। मुदारअली था। काले चेहरेवाला और कटीली मूँछेवाला मुरादअली।

शान्ति–अभियान पर निकलने से पहले छोटी बहस कि कौन किस सीट पर बैठे, आगे कौन, पीछे कौन ओर पहले कौन बोले, और कौन-कौन से नारे लगाये जायें। कुछ देर तक गडबडी रही, बस खचाखच भर गयी। मुस्लिम लीग के प्रधान के साथ बैठे हुए बख्शीजी सामने की ओर देखे जा रहे थे, पर गहरी उदासी में डूबे हुए थे। वे मन ही मन कह रहे थे, "चीलें उडेंगी, अभी और उडेंगी।"

तभी ड्राइवर के पास बैठे मुरादअली ने नारे लगाना शुरु किया और गूँजते नारों के बीच अमन की बस अपने शान्ति–अभियान पर निकल पडी।

रिचर्ड और लीजा बहुत स्वस्थ दिखाई दे रहे थे। रिचर्ड का शायद तबादला होनेवाला था। लीजा कहती है, "मगर तुम तो यहाँ रहना चाहते थे ना, टेक्सिला म्यूजियम में काम करना चाहते थे, अपनी किताब लिखना चाहते थे...?" रिचर्ड कन्धे बिचकाकर कहता है, "कहाँ से शुरु करुँ?" रिचर्ड लीजा को पूरे फिसाद की घटना को बताना चाहता था, लेकिन लीजा अपने कन्धे बिचकाती है। मानो कह रही हो, सुनाओ या न सुनाओ, कोई खास फर्क नहीं पडता।

संदर्भ

1. झरोखे – द्वितीय संस्करण – भीष्म साहनी – पृष्ठ 7
2. वही, पृष्ठ 7/8
3. वही, पृष्ठ 9
4. वही, पृष्ठ 12
5. वही, पृष्ठ 13
6. वही, पृष्ठ 13
7. वही, पृष्ठ 18
8. वही, पृष्ठ 21
9. वही, पृष्ठ 27
10. वही, पृष्ठ 28
11. वही, पृष्ठ 28
12. वही, पृष्ठ 32
13. वही, पृष्ठ 35
14. वही, पृष्ठ 37
15. वही, पृष्ठ 41
16. वही, पृष्ठ 45
17. वही, पृष्ठ 48
18. वही, पृष्ठ 51
19. वही, पृष्ठ 65
20. वही, पृष्ठ 66/67
21. वही, पृष्ठ 72
22. वही, पृष्ठ 72

23. वही, पृष्ठ 76

24. वही, पृष्ठ 80

25. वही, पृष्ठ 81

26. वही, पृष्ठ 82

27. वही, पृष्ठ 84

28. वही, पृष्ठ 87

29. वही, पृष्ठ 88

30. वही, पृष्ठ 88

31. वही, पृष्ठ 93

32. वही, पृष्ठ 96

33. वही, पृष्ठ 100

34. वही, पृष्ठ 102

35. वही, पृष्ठ 106

36. वही, पृष्ठ 111

37. वही, पृष्ठ 116

38. वही, पृष्ठ 119

39. वही, पृष्ठ 120

40. वही, पृष्ठ 124

41. वही, पृष्ठ 125

42. वही, पृष्ठ 129

43. वही, पृष्ठ 130

44. वही, पृष्ठ 134

45. वही, पृष्ठ 136

46. वही, पृष्ठ 138

47. वही, पृष्ठ 139

48. वही, पृष्ठ 139

49. वही, पृष्ठ 144

50. वही, पृष्ठ 146

51. भीष्म साहनी : उपन्यास साहित्य, पृष्ठ 79

52. तमस – भीष्म साहनी, 1999 (दसवी आवृत्ति), पृष्ठ 7

53. वही, पृष्ठ 9

54. वही, पृष्ठ 16

55. वही, पृष्ठ 18

56. वही, पृष्ठ 18

57. वही, पृष्ठ 18

58. वही, पृष्ठ 22

59. वही, पृष्ठ 26

60. वही, पृष्ठ 31

61. वही, पृष्ठ 31

62. वही, पृष्ठ 38

63. वही, पृष्ठ 38

64. वही, पृष्ठ 45

65. वही, पृष्ठ 45

66. वही, पृष्ठ 47

67. वही, पृष्ठ 48

68. वही, पृष्ठ 57

69. वही, पृष्ठ 58

70. वही, पृष्ठ 59

71. वही, पृष्ठ 62

72. वही, पृष्ठ 64

73. वही, पृष्ठ 68

74. वही, पृष्ठ 70

75. वही, पृष्ठ 76

76. वही, पृष्ठ 76

77. वही, पृष्ठ 77

78. वही, पृष्ठ 78

79. वही, पृष्ठ 90

80. वही, पृष्ठ 109

81. वही, पृष्ठ 114

82. वही, पृष्ठ 115

83. वही, पृष्ठ 120

84. वही, पृष्ठ 123

85. वही, पृष्ठ 123

86. वही, पृष्ठ 132

87. वही, पृष्ठ 133

88. वही, पृष्ठ 139

89. वही, पृष्ठ 142

90. वही, पृष्ठ 146

91. वही, पृष्ठ 155

92. वही, पृष्ठ 159

93. वही, पृष्ठ 160

94. वही, पृष्ठ 164

95. वही, पृष्ठ 165

96. वही, पृष्ठ 172

97. वही, पृष्ठ 172

98. वही, पृष्ठ 192

99. वही, पृष्ठ 193

100. वही, पृष्ठ 198

101. वही, पृष्ठ 199

102. वही, पृष्ठ 203

103. वही, पृष्ठ 206

104. वही, पृष्ठ 209

105. वही, पृष्ठ 215

106. वही, पृष्ठ 221

107. वही, पृष्ठ 228

108. वही, पृष्ठ 232

109. वही, पृष्ठ 233

110. वही, पृष्ठ 233

111. वही, पृष्ठ 254, 55

112. वही, पृष्ठ 255

113. वही, पृष्ठ 258